

#### न्यूजीनं दिविषक्यन-कोलीना कातल कत्रवाल पूर्वर 🐪

# সম্বন্ধ সমাধি

## নাটক্ষ্।

েকেমচিং সহস্ধ শক্রণা প্রণীত্ত্ ।

সজ্জনমানসভোষবিধানং ন ৪ ন্বন্টেককারকমানং।
হাচে কেবলমসুখনিদানং তাজ্ঞু বৈদিকরীতিবিতানং।

CALCUTTA.

PRINTED AT THE B. P. M's PRESS.

4867.

Price 1 One Rupe

गुना ३५ एक है कि

### विक्रांशम ।

#### 

वज्जत भात। गाम करमरणत ओहिकिमाधन मनुवाम। रखत कर्छ्या। প্রচলিত কুপ্রথা সকল নির্দাল করিতে না পারিলে জাবজি হইবার জ্ঞান সন্তবিদ। নাই। বছবিত্ত কুণজাতি দুরীকরণ সহস্থ কথ मध्र<sup>®</sup> ७ करांकि इंडेटच आभा कहां यांडेटच लाद्य मा। कि এক জাতিব কিন্তু এক পদ্ধীয় এবল কুপ্রথা নিবায়ণ ক্রিতে ৫চটা কর। নিতান্ত খ্রুসাহানক ব্যাপার বোধ হইতেছে মা। কুলীন देवनिकनिर्देश मञ्चल अथा ५ राजः दिवाङ् तङ्काल छावछि हालग्र। অ'নিডেছে, কিন্তু ইহার অনিষ্ট সন্ত সন্দর্শন কবিয়াও কেছ ইহা मियार (भेत ८५%) क्रिएक एक न**ि ना**हेक रल्थन हेफ्<sup>र</sup>ते। छन अगरग्र ङ्ख्या ल्यार्वत এक हमध्यात राज श्रुष्टि रहेग्री । आधि महे ্যজ্ঞের সাহাযো এই কুপ্রথা পেরণ করিবার চেষ্টা করিতে উদ্যুত अभारत स्थापि स्वामा वनत्न श्रीकात्र हित्छि । य अह লীটক-যন্ত্র স্থলর রূপে নির্মিত হয় নাই এজনা ইহাতে কুপ্রথা देशवन-कीष्टी मयाक् ऋटल मण्यन क्षेट्र किन् क्षेत्र एक् । मटका एक्के नांदेक लिथिश मुधारलत गानम शतिज्ञ कुर्वा वार्यात उत्प्रमा নহে, কেবল হৈ কুপ্রণা কি প্রকারে নিবারিভ ইইতে পারে, এই अनुश्रह पूर्वक और युद्ध मर्गनार्थ यमि মীক চেটা। মহালয়গণ। **धारतण करतन उरद आमात मकन**्यम नोर्क्क मर्दन

# नारिगांतिथिक वाक्तिश्व।

	•
<b>দূত্র</b> পর	
वाखिट्यं	<b>এक्डन कूलीन टेरिंग्क मछान कना कर्छ।</b>
क्रोमीनाथ	
তকরত্ব	अध्यातक ना पूटना ना मछ।।
বাচপাতি	টোলের অধ্যাপক। "
दक्षांत	কালেজের মুশিকিত ছাত্র।
ाविष्ट्रवर्ग	অধ্যাপক আন্তর যায়া।
इतिकाम	<b>ठ</b> ीक्ट !
भूरदर्भिक	ताङ्गि द्वाक्ष ।
· छकः विभिनः तिनिक क्षा	
कर्भी भारत	গ্রামের ভূষামী ৷
নারের	কালেজের ছাত্র।
बारसम्	
क्षांभिन	আশুতোষের সমস্ক্রা বেহাই বা বরকর্তা
स्टादसभाव ।	अनी हात्र ।
वक्र्नाश	त्योलिक श्रीकात्थात ।
डिकीन, (भग्नामः म्नारमक,	সেরেস্কাদার, পোন্ধার, জঙ্গ প্রস্থৃতি।
	••
महें।	
•	- অপশক্ষিতা প্রতিবাসিমী
ध्याहिनौ व। मत्नारमाहिनी	মুশিক্তি ই
	जान्यकारमञ्जूषा दो?।
वित्निमिनी	
	প্রতিবেশিনী শিক্ষিতা বালা।
	বাচস্পতির স্ত্রী।
THE STATE OF THE S	्थिविंगिनी औं।

# मशक न गावि

न हिक

4 (4)

धकंडानी

विसक्तरमिठ-मृत्रविमाहिष्ठ-गांग्रेनिस्व गिछमूतः । ८६७ ९ वाङ्क्षि देवनिक भक्षाज्ञभानमभिन सूरमृत्रः ॥

### সূত্রগারের প্রবেশ।

र्व थारा कात्म्य कि विश्व शांख क्यम वि कि रंग थारा रिह्छा नहिं आव यानक छिन छमलाक धकत रंग आमारक आर्मन कर्कन, या तक्यांनि मृद्रमें नाएँ किंग पिछना केत्र किंछ आमि क नृज्य नाहेक थूं को शाहेरम, विकाशकारी औष के यात्र यहाँ का कात्रत 'ड और का वार्च विरम्भ माथ शिक्त महानम आहर्ति। मर्थानमात्रात्र अमारम क्षांत्र भक्त नाहि किंग्रहें का जिन्हां हरेग निर्द्र, ध्यम आर्थि मुक्त क्षांत्र शाहिनीएक छानि स्वित मि पिछ महन केंद्र मिर्ड शाहिने

#### मध्य भ्रमीक्षा

केटा। रेटेनी फारने जिल्हा: केर्डमें देश खंतीं । विद्रालय नियम किछू जिल्हानि रखामाय।

## नगित श्राद्यम्

নটা। কেন-ছাথা বাস্ত হলে ভাকিকে আনার।
কি কাজ করিছে হলে ব্লহ্মজনায়।
করিয়া ঘাইব শীস্ত ভাছে প্রয়োজন।
সকলে দাভাতে আহে আমার কারণা।

खड़। जामति कथा थाक, जूमि चाठ राख दक्त ? किथा गाद वन दस्थि, दिला जदमान रहित्ह, अमन मनग्र किथा गादर

मणे। नाथ। अनेह कार्था यात्र ना, स्महाता मकत्न खरेषा जिल्ला स्मार्थ वार्ष्ट वार्ष्ट जारे आमार्क खरुष बरमरहा

द्व। कान छीडी द्वान (भट्स ?

मित्र अथम आहे कि कारनमें में एक विश्व किस मामारिका वाति हरक की मान (चारा क्षिप)

TI CALE RESERVED. MINISTERS CO. ST.

নটা। দিন ছয়েক হয়েচে, তাই দেখতে যাবো মনে কচ্ছেলুম।

স্ত্র। শুনেছি ওদের না পেটে পেটে সহস্ধ হয়ে থাকে। তা আশুতোষের কনাবিও কি সম্বন্ধ হয়েছে?

নটা তোমার মত ন্যাকা ত আর দুটা নাই, পেটে পেটে সম্বন্ধ কেন্দ্র করে হবে, মেয়ে হয় জি ছেলে হয়, তার ঠিক কি ?

সূত্র। কথার বলে পেটে পেটে: সভিঃ সভিঃই কি জার গেটে পেটে:—সভান ভূমিষ্ঠ হলেই নিবাহ সম্বস্ত স্থিত হয়ে থাকে: ওদের নিবাহের আর ভাবনা থাফে না।

ঘনারে বৈদিক কুল, ধনা ভোর লীলা।
ভানরে জিনেচো তুমি বল্লালের ফেলা।
এবার মরিয়া আমি বৈদিক হইব।
পেটে থেকে পড়ে আমি বিবাহ করিব।
গন্য মুলা ধনা বলি ভোর জনতা।।
বৈদিকেরা এড়ায়েছে বিবাহের দ্যা।

(तन्तरका। ७६ ना गाँउ, छ अस्मा ना । दन्ता निरम्ग्य । निर्मा नाथ । ७८व याहे, स्मर्छि स्मर्थ जानि । ज्या । जामिए एनिनाम ।

( मकरना अख्राम )

প্রস্তাবনা।

### প্রথমান্ত ।

्या ७००(रहत राष्ट्रि) - दमानाधिमी, दशाहिमी, जरनारहभी व्यक्ति महिलाबरणह लाउन । ।

মহিলাগণ। ওলো এলো। কি ক্ষিন্, বিরশ বদন , কেন। লোকের চেলে হয় না হৈছে এর না, ত কি হয়ে থাকে?

এলো। আয় ভাই আয়; বলি মেয়ের জনো ভাবিনা, পোড়া কুলের জন্য ভাবচি।

(संहिनी। कूरलंड अस्ता **छातना कि त्या**ः

नाता छोड़े। इ कूरनत ध कृत छ कृत मुकूत नाहे; रिश्व छोड़े दहें कर्गानि इरहाछ, काथाय एकित्वश्रंट्य खरानित यानाए कर र्वन, नो, भ्रास्त्र मस स्मान जना एखर एकत जात यूर्व मूर्य मर्फन धक नक वात दिन ना रस कृत वाक, धरक धेर भन्छत, खाशात खोटिना, ठाशांट मिल्डि इरह खाता; म्मामार्मत श्रंटक थोटि ना; यार्मत समन दान साहर, जातारे निर्धादना यून्य शांदर, जिन खाल मुन्नि विद्विद्य एन, यद रम्माद्व अ नाह; कि कृति, खाता काल खाँगे क्वेंट्य

्याहिनी। द्राँद छटन कि करन, छोका न। पिटल शास्त्र कु अबक्ष करन ना ; कोज् शांदि । এলো। টাকা না দিকে পালের জাত বাবে বৈক্তিং।
মাহিনা। সে কি, জাত যাবে কেন? নাহর মৌলিক
হবি, এপোড়া কুলের চেয়ে, মৌলিকেরা শত্তাণে প্রেষ্ঠ।
এদের কুলে জাটী এড়।

बहमत कूलत मेंगी कि कर अधिक। याबार विनात दूर छि हि धिक विक। भिक् तिक धिक गव दिनिक श्रीहात। आहादित मत्मा त्यां देनिक जीहात।

त्राता। जूरे छारे। यह की करा?।

লোহিনী। ভাই। সাদে কি চটি; ভোমরা ন কি জান না, তাই মনে কোলে। এ চটে কেন? আমরা ত চটিনে কালে চটায়ে তোলে, দেখ ভাই বালা কাল না বুছতে যুচতেই একটা শিশুর গলক্ণ করিয়া দেয়।

ক্রিদা। ভাই তাত আরো ভাল; বের দায় চুকে রইলো।

শাহিনী। না ভাই । ও চুকলোনা; চুক্রেরইলো। আমি দিব্যি করে বল্তে পারি, এই পোড়া সমুসই যত। অমর্থের গোড়া।

(गीरा। कि अकादत ? ।

त्मोम्। भागता छ जानि, विवाद अमृत भटनक करन

.

নেন্দ্রনী। ভাই। অকুলোসের উল্টো, দেখা, ৮৯ বিচ্ছর বয়লে ওকটি দুদে ছেলেয়, সজে বিবাহ হলো। পারে বার তের সক্ষর রা হতে হতেই (এ কুলে পাছেই) পারি শয় স্থাকী একে বারে জলাজালি হয়। হে পারিণয়। বিধাত ভোম কৈ সম্ভাগয় করিয়াও এ পালে বিষ করে পাঠায়েত্তন।

> হাম ৷ কেন পাঠাইলা বিধাতা ভোমায়, ্ মুখের বিধাহ বিধি।—এ পাপ ধরায়। व्यथिन अजनमा जूमि अतिनम् ; তোমায় পামর নিয়াকরে ছঃবময়। **मरमात माग्राव दम्भि मक्ति युत्री**छ: বিধির দিয়ম<sup>্ভ</sup>ন্ব <u>দুয় বি</u>পরীত্ত । পরিণয় !— মুধাময়—মুখের নিগান। সংসার অধিয় তুমি আকৃত নিদান্ত ट्यागात शिविज मास कृति ख्वरहना, मिन मिन प्रवंशन कटन के उपना। ंनव नव कुस्रायाठ अगित्र खमत, একেতে আসভ কড় না হয় পানর। नश्र निर्मा कुनका मिनीत यन दिसान क्षिति होत्र ! त्य छन अमन । , मकति विकर्त दम्य दक्ष वाट्य जामन । जानाँदर कारत जात नरेवन (रामन । কোখাম রহিলে লিডঃ—তনমা রতন भद्र निष्ठ ग्रेंब क्षि विभक्त म

मिणिस कोहर धरत कि कोह कि विति।

मा छातिरम छोति मुणा, क्रास्त्री वर्रम् ।

श्रुष्ठि सम जमगीज की नरमज मात्रः

रम मनि मरमज मुछ मा रम सहित ।

कि स्त्रांत की नरम छोता नर्गि ध मरमारत ।

क्रियरम क कर्मा वीरश्च कतिरुठ था श्रुरं ॥

সোদা। ইদ্যাৎ এক আৰটা অনন সর্বনিইঘটে। নোহিনী। না ভাই দৈবাৎ নয়; ও পোড়া কুলে প্রায়ই ঐ ৰূপ ঘটে; দ্বীলোকেরা চির বিরহ সহ্য করে, তাতেই ঐ দোষটা বেশি হয়, তাহাতে বৈদিকদের কুলের বা মানের হানি হয় না।

वाभिनी। अभन कूटन काल कि छोड़े। अ अटभका अ कूटन जनाक्षान मिरा स्थानिक इंडेग्रा छोन।

ज्ञा । स्थितिकता वेड हिंगा

মোহনী। ভাই। তুমি এই কুলের নাড়ী নক্ষত্র জেনেও মোলিকৈদের নিশা কর; তাহারা মাতার ঠাকুর; হেঁজ কিনে?

जिला। छात्र (मारह नाटि, उत्र में छ भाशे कात नाहे।
साहिनी। छ। कि छाहे नकत्वहें स्मरह (नटि, दक्छे
किंद्र (नटि, छ। कि छामात क्वीटन करत ना ; थछ मिन
हात्रा (शांश्वा हन्द्र थयन शर्मे। हन्द्र भारति श्वा हन्द्र।
किंद्र (शांश्वा धक क्या क्वीटन गीमिट कि हत्वा।
क्या वत्र (भौनिद्यह क्या खानक सहिन करक।

প্রের ওছিরা ঠাকুর প্রে করে থয়।
সোহিনী। ব্লিণে ঠাকুর প্রে। করবে না.ত কি
প্রে কাওরা ঠাকুরপূজে। কররে: তাতে কি ভারা হেঁজ।
প্রেলা ভূকি ছাই জানন ; কুলীনের কভ মানা;

(माहिनी। हा शांशित । कूनीन मानिक कि मोइरमध्र करतिहन , थे इच्छाशाता आश्रमातारे कूनीन मोलिरक्रत एकि करतिहा, श्रादमध्र एक नग्राट कि शक्ष-शांड थोरक । जिन मकलाति श्रीक ममान , जेत काष्ट्र कुर्योस (मोलिक मारे।

এলো। ভাই। সে যা হোক, লোকেত মানে; কোঝার গেলে, একুলীনের মাগ এনেচে বলেও ড মান রাখে

भाइनी। जूड कर हिन वर १५८क (रक्निन दर!

(म कान (नह आंत, क्यन कूनीरन किছू इस ना। त्याना
होना ना थाकरन आंत (कह माना करा ना। क्यन मान
होकाय, जूनि या उछ कुनीन इस मा (कन, जूनि पांत अक
हम भन्दात्नत हो कुकर क्यान (म) जिस्क ना हो

(गरन, (म जामांत का) हिराव क्यान (म) जिस्क ना है
सन्दै। तन हो कि कुछ आंक्त कराव छात मीमा नाहै।

करना। (मृन्कि । बिट्ट कशा नहा, ज्यन शाह वे इकन

अत्यदक्तारके।

्रिक्तिक विकास स्थापित विकास वितस विकास वि

পাড়ীরও ভাদুল কোরে নাই, কেবল ধনরো বিহু আনবং

बटना। किन छाड़े विष्णात क्योतिय दमहे बीमन कर्य वटन किन ? विष्णात क्योतिय कि क्यन शिट्स शाटक ?

মোছি। আর ভাই। বিদার গোরুর রইল কৈ হ ভাই জানিস্ নে ত, প্রায়ই ঐ বাং হচেন্ত, আনি শুনেটি নৃত্য জনিদারের বাটিতে প্রোর বিদায়ে অনেক মেকি চলে

থালো। যা ছোজেল ভাই। দেশের কথা নিজে আনাদের আর ফি হবে।

নোহি। সম্বন্ধটা এথন উট্লেই অনেক মন্ত্ৰ দেশ দেখি ভাই। সমূদ্ধে যে কত কটা, যদিংপাটা সম্বন্ধ দা থাকতো, তবে কি এত দায়ে পড়তিস্

এলো। আর ভাই কি করি, আমাদের ত সম্মান্ত কর লিই আজি তুমুল বাধ্বে, কিন্তু দেখ ভাই। কত কত্বড় বড় লোকে সমুদ্ধের নামমাত কর লেনা, বিতীয় স্থান্ত প্রতি কর লে, তাতে কোন কথা হলো না, বভ আটি। আঁটি আমাদের বেলাই।

নেছিল সে ভাই। নান্ত্র কেন? দেবতাথের ভর্মণ শুন্তে শাওয়া যায়। কোন পঞ্চনিন না বলোই লেন; প্রার বড় ছেলেকে বারণ করিল ভ কর নাজ্য ভোর হোটাইলের সাত ভাজবো"। তুই ভ নেখাত নিয়েই বুকিন্ন কলো। তেই । মে কালে কি সকলেই মুক্যু ছিলেন, আমি জানি যে এখন অপেক। সেকালে অনেক অধ্যেপক ছেলো।

्रिष्ट्रि (त छोड़े। अस्मिक कारनत कथा कराना, यथन रिक्रमेशिन, ताल्मीिकित आविस्तित हिल, रेक उथन उ कुनीम भोतिरकत कथा खना यात्र मा

ें बरना। इंडर्स काया इंड्रड इरनः ।

মোহি। যথন সংস্তুত চর্চা উচ্চে গেছেলে। তথ্যস্থ যা মনে করেছে, সে তাই করেচে; যে কিছু লেখা পড়া শিথেচে সেই যা ইচ্ছে করেচে

এলো। তা হলে কি ভাই সকলে মানে, কই তুমি ভাষানক লেখা পড়া শিখেছো: কৈ তুমি একট। স্থিটি কর দেখি কেনন সকলে মানে।

প্রধানি। এখন কি ভাই। আর সে কাল আছে। প্রধান সকলের চক্ষু ফুটছে, আর মংরিঘুরি খাটরে কেন ? সোদা। ভাই। আর কেন মিছে কথা বাড়াস মারি ভাড, বেলা গিয়েছে।

्रियाहि। मा छाडे पारे ए, এলোকে বুঝিয়ে দিছিলুম ; के महत्त्वक क्या ७३ करें शाटक, निष्कं कुश्रह, उथाशि कुस व थियात एको कटक।

সোদা। ও কি কুল রকার চেন্টা কচ্চে ? আর করেই বা কি করবে। গোটি। কি করবে কেন, যানী বাড়ী আসলেই হয়ত ठाटक शक्षना रेपटर्व, रेमट्स এठ रहे हैं है।, जेतू मेहस हिला मा, कि कर्दन, अटकरम উদয়ামের अना को छहे, छात उन्नेत खाताब शक्षना, स्म शहर अटबंध द्वांश रूप छूनी रूप्त मा। छात समारे तुस्किनाम।

থলো। ই। ভা । আনি তাঁকে ঐ ৰূপ বলে থাকি।
না বলেই বা চি করি, লোকে দশ কথা কয়, ভাওত
স্থলতে পারিনে। কাজেই বলতে হয়।

लाहि ना छाहे। अभग कथा आत वटना ना, तिथ छाँव मिथ कि? छिनि छ धे मध्यस्त करना विख्क इटल (वफ्राफ्न, वाला कारण विख्न करन, शिष्ट्र गांक्हीन इटल, स्नथा शहा हिएक मिरल छान स्मृह छोठिशानन अना निवस्त पुटल विख्न छोत कि हैएक नश छानारमत छर्थ हैम्हर्ण वार्थन; कि कत-विन्न, क्षिणा शादन यथन विजित्व थाकरना, स्थम छोहे कृमि कोम कथा ताला ना; शिष्ट खाना नातीय, श्रीम अर्था; डांशाफ क्ष्मां कामारामाती इहेशा श्रीम अर्था; डांशाफ क्ष्मां करता ना धिर मध्यम कतिया गां छिटिए शादन, स्थम करता ना धिर मध्यम कतिया गां छिटिए शादन, स्थांश करता ना धिर मध्यम कतिया गां हिटिए शादन, स्थांश करता ना धिर मध्यम कतिया गां

ब्रामिनी माँद्वाता जान ट्रेन्क्रि

"পুর্থের ভারত রাজ্য হলো ছার ধার। সমক্ষে করেচে বন্দ উন্নতিয় ভার।

'না হতে দৈশবাতীত বিবাহ স্কুল্ৰে গ্ৰন্থিত ় না হলেই বা মনোমত নিজ পরিবার। দশ্ভিপ্রণয় সুখ, ইহাতে নয় অভিসুখ, क्वन विष्फृप प्रथ मरह अभिवांत्र॥ वोनाकारन करत्र विरयः विज्ञ मः मात्र लएयः ক্ত যে যন্ত্রণ সয়ে রাখে পরিবার।।

একো। আক্ ভাই। এবার অবধি তাই করবো। নহিলাপণ। তাই করো, বেলা গেছে আমরা আহি তবে।

मकरमत अञ्चाम।

इंडि जांथयांक

, Sec.

## বিভীয় প্রশ্ন।

कामीनारशस वाही। आखरणात्मः श्राटकम ।

ত্রাপ্ত। দার। কি বরে বাছ।-स्मिश्रामा । एक वेता ।

আন্তঃ আমি এনেতি, একবার এমিডে আস্তর।

कार्यास्ट्रिस त्यादक ।

কলৌ। কিন্তে আশু। কি বাজ এলে। পাত্র ভিত্ত इत्हर्ड दि :

আশু। নহাশব। যুৱতে ও বাকি গাবিনে। দল্লপুর নিজ্পুত, জনুনগর, থাজি, মুডি: কাড়াল, গোমপুর পর্যাভ म्ब दूँ बनाम दिख १३८७३ ७ अनुमक्षाम कार्छ शास्त्रम मा

कामी। असने गुलमूर्य मा एक असम मुलाई वा इत्व दिन। पूरे शिलि गांज श्रुवात्व: पूरे संक्षित व्यान**भूदे**त গেলি কি কন্তে:

न्यांखा दक्त, वे त्य होतूर्या मणाई वाबुब मदक আবাদে যেতেন, তিনিত আবাদ অঞ্ল থেকে পাঞ্ थटन दर फिट्य हिलान : जामि ठाई कटनाई शिहिनान।

काभी। शा मूर्थ। धता त्य ताड़ी वामन्।

्रेष्ट्रां के विकास कार्य कार्य वासन शहकटल शहरत, आह देविकि शंकाल शहर मा।

্ৰানী। এমন গুৰ্ম ভ কণন দেখিনে গা আগে গ্ৰুপ্ প্ৰাম বিভীত কি কথন বৈদিবের গাস শুনিটিয়: রাজী বামনেরা রাজুনি হল : মোলাঙের হয় : ভালাভেই কালে। বার্দের সঙ্গে নানা স্থানে থেঙে হল : ভাতেই কালে। কালি বাস হয়ে থেতে পারে। বৈদিকের ত তা সম্ভব নহ।

কাশী: মে হয়ত কোন রাজ। রক্ষেত্র পুরোজিত ব্ গুরুষম্পারে বিশি, বাদা বাবে থাক্ষেত্র

ভাষে: নহাশ্য : ওটা যেন আপ্তগক্ষে কথা হালা।

কাশী। ও সং চুলোয় থাক : কাজের কথা কি বরদেখি, সম্প্রের কি হয়ে।

নথক ক্টলে বন্ধ ক্লমান যাবে।
মৌলক বলিয়া সবে অবদা করিবে।
যে মান পেতিম তুই মৌলিক বিকটে।
কথন ছাড়িতে তাহা হবে অকপটে।
বৈদিকের মধ্যে গণ্য হবি নাকো আর।
বিটুইতি, জীবিকার প্রিবি, সংসার।
ইবুল চেয়ে ওবৈ মূবী। প্রাণ হানি ভাল।
জীবিত থাকিয়া বিক্লা সবি করে কাল।

সাহ। পানি সার কি করে। যত জ্ঞেন্তব্যক্ত ভা সুরলান এখন কি করি বর্ন

कामी। कर्तात मानका थारत गा, ता किर्पा अम्हा ना क्किंग भाव स्मित्क शादता।

অংশ্ব আমার আবার ছাত্ত সাপের বিপ্রতার কাদন বেরিয়েছিলাম, তাতেই যে কি হয়েছে তারিছ

कानी। पूरे कि अंश्रेस वाड़ि वार्निक

তাত । আজে াা, আমি এই আদি , বাড়ীর প্রতি এখন ও বলতে পারিনি।

कानी। (माञ्ची किल्पाना हानाः

णान् । जान द्वि मन मिन।

কানী। তবে স্তিকাপুসাও সাটকোতে হয়ে গেছে। আও। তানিনে, আমি ত বাড়ী ছিলান না, নে কি

কাশী। তিনি নেয়ে সাম্ব, বিশেষত ছতিকাগারেই ভাষতে বালিকা, তিনি করিবেন, কি। এরচ টরচ দিয়ে গিয়ে ছিলি?

আত্র। আত্রে কোথায় শ্রি। একেইএই সম্ভর পেটের সংস্থান কর দার হয়ে উটেচে, বে দুই এককাটা বস্তুর ছিল তা এবারে গিমেচে, ডিফারে কণ্ড উটে গেচে।

## উৎ দর্গ।

## বিবিধ মহত্বাদি গুণগণালস্কৃত শ্রীল শ্রীয়ক্ত বারু গুণেন্দ্রনাথ ঠাকুর মহোদয় মহীনয় চরিতেয়

মহাশ্য়!

আমি মহাক্তার অসামনে। ধনেশহিতৈবিতা মহাত্তারত।
বদানাতা এবং রমবিশেরজতা প্রভৃতি গুলারলী বিলোকনে সাতি
শন্ন পরিভৃত হইয়া পরিতোধ প্রকাশ সানসে এই সম্বন্ধ সমার্থি
নাটক স্বরূপ কমল—মালা মহাশ্যের চরণকমনে উপহার প্রদান
করিলাম। এই মালা ফুলাম বৈদিক কুসের চিরকলক্ত—নিদান
নামকরেপ নীল কমলে সংকলিত ও সেই কুপ্রথা নিবারণের
নামপার হত্তে প্রাথিত। অতি মলিন কর্ম্মিন লব মেদিনীপতির
ক্রালা সংলগ্ধ হইলে কর্মিকার গৌরব ধারণ করে
জাতএব কমল—মালা স্থরভিত্তা না হইলেও এবং ইহার গ্রন্থ
জাতুরী চমৎকারিণী না হইলেও মহাশ্য জিচরলে স্থানদান করিনামারও প্রামারণ প্রমানীয় ও গৌরব-শোরভ—সম্পন্ন হইতে পারিবে এবং
স্থামারও প্রামারণ সক্রম্প্র

শালকাত। কুনুত্ৰ আঘাত কুনুত্ৰ সংলা। खननेत्र अनामाक करी

## **डेश्रम**ी।

# विनिध महस्रापि छ व्यानकृष्ट जीन जीशाल वाहा छटशसन्द्राच वेदकृत महस्य स

五美 海京 。

ফানি মনাবলে ক্ষান্ত কাল্ডি নিজে মান্ত্ৰিক নিজে বিল্লাছন নাটি কাল্ডি এই কাল্ডি এই কাল্ডি কাল্ডি এই কাল্ডি কাল্ডিকালি কাল্ডিক

ক্ষিক্তি ২৪০ আখাত (১২৭৮ সংগ্ৰা जनभीत धनामान अली जी

#### **्वमा** दशका थादका

বাচ। ওতে কেদার কোখা নাচ্চ, আজ ত রবিবার বয়, বালিচে কেন?

কেদার। মহাশয়। শাবীরিক কিছু অ ১২ ইওয়ারেছ্র দিন কযেকের ছুটি লইয়াজা

বাদ। ওদিলে কোথার বিয়াছিলে १

रक्ताव । वाखर्डण्यत व नि भिगावित।म :

বাচ : পুমি আশুতে তাষের বাটা কি কনে গিয়াছিলে?

বেদার। মহাশয়: কোন কাগ্রাপুদেশে গিয়'-ফিলাম।

বাচ া কি কার্যের, আমরা কি শুনতে পাইনে? ।্
কেলাব । বা এমন রেচ্ছ্রান্নর, ঐ আশুভোবের
কন্যাব নায়ন্ধেব জন্য ।

বাচ। তুমি কি কেথায় পাত্র জির কবেচা 'ভাই' বলতে গিয়েছিলে ?

তক : বলতে পিরাভিলেন বটে; তা সময় কলেই হোক, আর তুল্তেই কোক।

নাত। লেকিছেবাপু! শ্রাকি **নয়ন্ত ত্রি**বার চেষ্টায আ**ছেন।** 

ত্রক। ,আডের হঁণা: এঁর। সকলে একত্র-ক্ষে থা**র্কাতে** ক্ষামাদের কুল সম্বন্ধ রভিত হয়, ভারির চেন্টা কলেন। 'ই

ৰাচ। কেন কেদার ত,তেমন লোক নেয়, ওটা বছ শিষ্ট ও শান্ত এবং নিরীই মন্তার। 3.30

কেদার। 'মহাবীয়া। সমন্ধ তোলা কি অশিক্টের ও অশান্তের এবং দুই শ্বভাবের কাজ।

বাচ। বাপু হৈ। তোমরাত ছেলে মারুষ, তোমা-দের বঙ্গে কি আমাদের তক্ খাটে; ভোমরাত কাল্কের ছেলে।

কেদার। মহাশয়। আমিত আর বিচার ক্লিচ না. মহাশয়কে জিজাসা ক্লিচ।

বাচ। বাপু কে: বাহ, আমাদের পুক্ষান্তল্যে হয়ে । আনে, সেটা ভোমরা ভুক্তে চাও, একি কথার মধ্যে।

কেদার। মহাশয়। খুক্তি দিদ্ধ হলে আপনাদের মত কেনইবা হবে না।

বাচ। শাদ্ধের ফ.ছে অবার মৃক্তি কি ও তাকেই ও বলি, তোমাদের সজে কথা কহাই উচিত নয়।

ি কেদার। মহাশয়। আমন কি কুকথা করেচি, যে কথারও অযোগ্য: সম্বন্ধ প্রথা যদি মুক্তিবহির্ভুভ্ ও অশান্ত-প্রতিপাদিত হয় তবে কেন আপনারা অসমত হবেন।

বাচ। ভোমরা এখন বিজ্বন্ হচ্চো, শাল্রের যথার্থ মর্মা রুমচো: তথনকার সকল লোকেই কি মুখা ? কেহ শিক্ষার ভোমাদের মতন শাস্ত্র বুরুতে পাত্রো নাঃ?

কেদার। "নহাশর। আমি কি সে কথা বলটি, ঞা তথন শাস্ত্র কেং রুঝতে পাতোনা: মধ্যে মুসলমান রাজস্ব সময়ে দংক্ষুত চর্চার মংপরে।নাতি ব্যাঘাত হয়; ভাহাতেই মথার্থ শাস্ত্রীয় প্রথা পরিব্রতিত হয়। পরে মে কিছু মংস্কৃত শিখিয়াছে, সেই নিজ মত স্থাপনের ও নাম চিরস্থায়ী করিবার নিমিশ্ত এক এক প্রকার প্রথার স্থিতি করিয়াছে।

বাচ। এটা তুনি কোখায় পেলে, খ্টানেদের ভঙ্গা-বার নত তোনরাও অনেক্ গুলি গত্ গাঁডিবা রেখেছ নাকি "

কেলার। আ'তের আপনি ছির্চিতে বিবেচনা কর্মন না কেন ? রখুনন্দন ত অনেক কালের লোক নয়, রখুনন্দ-নকে দেখেচে, এনন লোকও আজো জীবিত থাকতে পারেন্।

वाह । छ। इत्लोई वी, छोट्ड करि कि ?

কেদার: তাই দেখে বিবেচনা করুন ন। কেন, বে ব যুনন্দন নিজ নত চালাইবার নিনিত্ত প্রাচীন ঘুনিপ্রণীত যুতির,কত বিপারীত করিয়াছেন, লোকে একণে মথার্গ শাস্ত্রের অন্নগত ন। হইয়া রঘুনন্দন বা বলে গিয়েচেন, ভাহাই শিরে।ধার্য্য করে: মুনিবাকো আর শ্রদ্ধা করেনা।

বাচ। মুনিবাকো শ্রদ্ধা করেনা, সে কারা, তোমরা; রখুনন্দন কি তোমাদের কাছে অগ্রাহা হলো নাকি ?

কেদার। মহাশয়। খদি ক্রুদ্ধ না হইয়া স্থির ক্রমা বিবেচনা করেন, তবে রখুনন্দনের বিদ্যার দেভি বেরিয়ে পড়ে।

वाह। अह वाशु ! वित कि इ । अ शाशि के नंद्रान

ধনেতের মুখ্দর্শন কর্তে নাই: এরা ঘোর পাষ্ও, বলে রঘুনন্দন আধুনিক, তার ব্যবস্থার ভূল, কি পাপ, কার মুখ দেখেই বা উঠেছিলাম, যে এই পাপিতের মুখ-দর্শন কর্তে হলো। বারেক্ক। মহাভারত।!

कितात। सङ्गण्य । त्रांशंड इम किन, व्यक्ति तृबिएस मिकि, द्वि इत्स तुक्ता।

বাচ। কি বোঝানে বোনাও দেখি, হা অসুষ্ট। আমা-দিশকে জীবিত থেকে এও দেখুতে ও শুন্তে হলো, হা কপাল।

কেদার। আপ্নারা যে সম্বর করেন, সে কোন্ শাস্ত্রা-হুসারে ও কি যুক্তি অনুসারে ?

তর্ক : ( হগত ) এ যে ছাড়বার থদের নয়, শোষ মার টে না খেলে হয়। মল্ট বা কি বলে? ( প্রকাশে ) বাচন্পতি সহাশয়। তর কথার একটা সীনাং সা করে দিন, চলুন ওঠা যাক।

बांচ । अत जात सीमा९मा कि. अ कि अक्टें। कथात मध्य, ज्यांच्या सीमा९मा रुकि ।

তক। তাই করন না মশায়! তা হলিই ওর এোঁত।
মুক ভোঁতা হয়, আর ও কথা কইতে পার বে না।
বাচ। শোন হে বাপু! তোমার পুর্কাপক্ষের উত্তর
শোন; আমরা অশান্ত্রীয় কাজ করি না। ''জাতমাত্রেণ
কন্যায়া বাগ্দানং কুললক্ষণং" কন্যার জন্মনাত্রেই
বাগ্দান করিতে হইবৈ; তবে আনাদের কুলরক্ষা হইবে।

তর্ক। কেমন হে বাপু। তবে না কি শান্ত নাই, শান্তত শুন্রে: আমরা কি অশান্ত্রীয় কাজ করি, এখন ত আর সমুদ্ধ বন্ধের কথা করে না ?

বেদার। মহাশার! দুটো সংখ্যত কথা শুন্লাম বলেই কি সমুদায় চুকে গেল ? ১

ভক্: তে'মার কি আপত্তি বল প

কোর। আশার আগতি এই—ও বচনটা কাহার। পাকে: কেবল বৈদিকের পাকে, কি নহান্যাতের পাকে: হর্ম মাত্রের পাক্ষে যাট হয়। তাবে শাস্ত্রে অনংখাভাব হ্রিছে, সকলে ত ভাহা করে না

विष्यः नः (क्रानाः) ५ प्रान्तिः । द्वानाः दिविकः कूनः ।

কেদার! মহাশ্য়! ব্যাপাকাভির পক্ষে লাজীয় বাদহা অ'ব একটা দৈখাতে পারেন:

ত্রন। (বগত) এইপোর্যোগ স্থান্ত দের্গা, সাহিত্তেই নিসার নাই, জানার ব্যাপা, ব্যাপ্ত। (প্রকাশে) নাচস্পতি সশায়। আবার কি বলে নে।

নাচ। (স্থাত) মিথ্যে বড় বল্চে লা, ইফাকে একটা স্থোভ ও দিতে হবে; ওজে বাপু। তোনাদের ত নবং শুভি পাঠ হয় না; এ সব নবা স্মৃতির বাবস্থা।

কেদার। মহাশয় ! বুলি মুটি প্রক্রেপ কেন ক্ষেন।
এ ব্যবস্থা কোন্নব্য মৃতিতে আছে আর কোন্ মৃনির
বচন বলুন দেখি ?

्र वाष्ट्र। धार्मि कि जाहे मूथक्र करत रत्नरथिष्ठ १ प्रश्राम वरम मिर्ड शादि।

কোর। মহাশয়। এই নিন্ স্মৃতি (বলিয়া হন্তস্ অফীবিৎশতি তত্ত্ব বাচস্পতির হাস্ত প্রদান)।

বাদ। যাপু। চসম। নাজেলে দেখতে পাইনি, সময়া-মুসারে আনার কাছে যেও, নামি দেখায়ে দেয়ে।

তর্ক। (ছগত) বাচস্পতি নশাস এই বাবে প্রা-নার পথ দেখুচেন, ও কিন্তু ছাড়বার পক্ষেত্র নয়।

কেদার। মহাশয়। ওটা কি ছাক্তিসকত; এনং নহা-শয়ের ব্যন্তী আনি শুনিচি; ওটা আম্পুনিক বচন। কোন প্রামাণ্য প্রস্তের বচন মহ।

বচ (খণ্ড) তবে ও বচনটা কি আকাশ থেকে পালো ?

• কেদার: আমি গুলিটি, গুটী গণ্ডিতনর জীল জীযুক্ত প্রাণক্রফ বিদ্যাসাপর মহাশাহের বৈদিক কুলুজীর বচন; এখন সেইটি প্রমাণখন্তা মান্য করে কি কাম কতে হবে?

বাচ। তোমরা ত কিছুই মান বে না, তোমাদের ত কথা নাই, এটা আধুনিক ওটি মানিনি, তবে তোমার মনের মত বচন আমি কোথা পাব।

ন্তর্য। (স্বগন্ধ) বাচস্পাতির আর বিদ্যে কোরে না এখন কেবল বাগ্বিততা করে সার্বেন, মনে করেচেন নানি? ওরাও তাতে খুব চতুর, হঠাৎ চোকে খুলো দিতে পারবেন না, ঘীকার কর্তে হবে, হবেই বা কি? হয়েচিই তো (প্রকাশে) বাচম্পতি নশায়। তার নিছে বকেন কেন? চলুন বাই: ওরা নান্তিক: ওদের সঙ্গে বেশী কথা কওয়াই দেখে। চলুন যাই।

( "阿田田田田田)

Plu hands i

# তৃতীয় খন্ধ।

#### - with the second

#### স্থাপ্তভোষের বাটা কাশীমাথের প্রবেশ।

কাশী। ওরে আশু। কি করে এলি, অনেক দিন হতে চল্লো যে

আশু। কি কর্মো, পাতা না পোলে সম্বন্ধ করি কেমন করে ?

কাশী। পাত্র কি হরে বিদে পারি, আবার শুন্টি না কি তুই সমন্ত্র করিনি, অদপ্পাতে যাওয়ার পূর্বে লক্ষণ এই গুলো।

্ আশু। মশায়: একে ভ পত্রি পাওয়া যায় না. তা আমার না হয় শাঁপে বহু হোক।

কাশী। কেন নাায়ভূষণ না একটা পাহের কথা বল্ ছিলেম। তা সেটা কি হলো।

আন্তানে বাদিলে মেরেটা থেতে পাবে না, চকের উপার তা দেখাও বাবে না, একে নিজে থেতে পার নি, আবার ইচ্ছে করে মেরেটারও ঐ দশা ঘটিয়ে দেবে।

কাশী পিরে আছামাক। আনাদের কুলীনে ওসব শুলতে নাই, তা হলে তোর বে হলো কেমন্ করে? তোর ত চাল চুলো কিছুই ছিলো না। বাচ্পোত্ তোকে মেয়ে দিলে কেমন করে কেন্তের কপালে সুখ থাকে, ইবৈ, না থাকে কোথাতেও হবে না। কপালঃ কপালঃ কপালঃ মূলো ,, কপালই মূল।

আশু! তা বলে কি করি, আমি তা পাববোনা, এতে এক্লোরেই হই, আর স্থাত্ই যাক্।

কাশী। ওরে জাহাধাক। তা নয়: নিভান্ত যদি কর্বিনি, তবে এক প্রামর্শ শোন্। যাতে মুদিক রজায় রবে।

षांख। एपिश दिश्म कृत्व उत्त ।

কাশী। আচ্ছা। আমি ভার জবান দেনো। হুই একন তা কর্মি কা বল্লেখি।

স্থান্ত। নদি দুদিগ্রয়, তবে হানি কি? কিন্তু এসন্ উপায় ত ভেবে পাহ নি:

কালী ভূই দিন কত কোথার গে থাকতে পারিস।
গারে ফিলে এলে বলিস্, যে সেওড়াপোলে ফিদ্ধান্তদের
বাড়ী জগংরাম বিদ্যানাগীশের ছেলেন সভে সমৃদ্ধ
করে এয়েচি।

শশ্ভি। দে কি ? এমন হবে কেমন করে। বে দেবার সময় ত শোচ্চুরি বের য়ে পড়বে।

কাশী। মরে আহাগ্রক। আগি যা বলি, তাই কর দেখি। তার কি আর উপায় নেই।

আশু। তার আবার উপায় কি ?

कांगी। वहतं पुछिन वातम विसिष्टे श्टना, व्यास। त्यादी-

টার কি কপাল। এমন্ ঘরে সম্বন্ধ করেছিলুম, বেশ খেতে দেতে পেডো, দুখানা পত্তেও পাত্তো, তা সে ভেলেটা মরে গেছে, আমাদের কপাল কি মা। ভাল হবে কেন।

আশু। (আশুর্যা হইরা) সম্বন্ধের ভেডরেও জুক্রি, এমন করে কি কুল বজায় না বার্থলিই নয় বুঝি?

কাশী। তুইত বুঝিস্নি, ওসব চাট; অমন কত শত করে দিন্তি, তোর এই একটা বৈত নয়। কেউ কেউ সব মেয়ে গুলোকেই এ নকম করেছে। এখন এ কর্গে আনি আর দ্ভাতে পারিনে।

(23/71)

আশু। (অবাক হট্য়া) ভোনাদের কুলের পায় নোস্কার (মগত ) করি বি, নানা লোকে নানা কথা কচ্চে কিন্তু নয়ন্ত্র না করাই ভাল, কাশীদাদা যা বলেন, তা কিছু নন্দ নয়। পারে যা হয় করা যাবে।

### जारमारकभीत कारवण।

थिला। (इँ भा छोन निष्य इत्युटि। भार्य भक्तत इय, किन्न এङ भिं गोन छ कोशीय प्रशिनि, योद्शिक् धक्न कि चित्र कहा वन प्रथि।

चारा । ওরে ! काशीमा এই রকম বশ্চেন, তা ভুই কি বলিস্ ?

এলো। এতো আরো ভাল, তবে তাই করো, দুকুল থাক্বে, আমাকে দিন কতর মতন কিছু দিয়ে তুমি বিদেশে থাক, তাহলেই যদি সব চোকে ত, মন্দ কি ? আশু। তবে তাই করি, নাগরভূষণ নামার কাছে কিছু পাবো, তাই আনিগে, তোকে দিয়ে আমি বেরুই। ( উভবের প্রস্থান। )

## भाग्यक्षरभद्भ दांगे । क्षायरकारं छेशबिक ।

ন্যায়। ওরে ! তোকে কদিন দেখতে পাইনি কেন? আশু। আজ।—আনি—

ন্যায় : আজ এনন সময় কি মনে করে এলি, কাজ-কর্ম শিখ্ছিলি, কামাই করিম্কেন, আব একটু শিক্লে (কম্পোজ) তথন আরে কিছু নেশী নেবো।

আশু। আমানে কিছু প্রচাদিন চলে না, আর দিন দুদ্রিন আম্তে পার্ফোনা।

भारत थाक्हा १ वाक्न धूनिया अनेका धार्मान) अहे नि १

পাশু। আত্তে, সার---

ন্যার। আরো। আর ৪ টাকা তোর মেয়ের সমৃদ্ধ করে এয়েটি, তাতে খর্চ হয়ে গেচে।

আশু। আমি ত ওখানে সম্বন্ধ কলে চাইনি, মেয়ে টা খেতে পাবে না, ছোকে দেখুবো কেমন করে। আমি ওখানে বে দেবোনা।

ন্যায়। তারে মুখখু। মেয়ের জাদেটে থাদ ভাল থাকে ত ওখান থেকেই সুখী হবে, এখন যা।

(প্রস্থান)

### আন্ত বার্টীতে উপস্থিত।

আশু। ওরে। শুনিচিস্ মামা সেথেনেই মেয়ে-টার সম্বন্ধ করে এয়েচেন।

कत्नारकभोत धराम।

এলো। তা ককন্, কিন্ত বে দেওয়া হবেনা, না খেতে পেয়ে মর্বে, আমার অমন কুলে কান্দনি—

वानिकी - नुबक्तितिषे - कानरोका।

ना थाहेशा शांव शांव ज्वात कि कहित्व तता। कनात मथक छटन भन उठांचेन शता॥ कि आह्म विधित भटन, क्वानिव छोश क्यान. এ कृतीिं कर्ज मित्न छेठियां घाष्ट्रत्व वता॥

আশু। গামা ত করে ফেলেচেন; এখন আর আপনা আপনি বকে মলে কি হবে, বে দেবোনা স্থির রইলো।

এলো। তথন কি আর এ কথা মনে থাক্বে ? লাভে ইতে আনার নেয়েটার পারকাল গোলো। সামার কি ? তাকে ত আর ভুগতে হবেনা, এখন যাই সংসাঁরে ত আব কেউ নাই, যে কাজ কর্ম করবে।

(প্রহান)।

### রাস্তার উপর।

यदगदमाहिमी ७ मोनागिमीत श्रुद्वमा

মনে। ও সোদো। তোর বে এও বেলা এখন নাম্ভে ফাছিস্, ওদের বাড়ীর প্রজে দেখ্ডে যাবিনি প

भोहा। इंडा निनि योक्षा देव कि पासिनीत शूबरक दम्थटक योद्यानाः व्याद्यादम्ब दिवसः।

মনে, ও ভাই। আনাদের কুলে ও আছ্বাদের বিষয় নয়, ও এক রক্ষ তুঃখের বিষয়:

(मोम्। । मृत्थात विवत दक्त किक।

মনে। এদিন ছেলে নার্থ ছিলো, কে'ন ভাবনা চিত্তে ছেলোনা, এক মুটো খেতে পেলেই হতো। এখন অনেক ভাবনা ভিত্তের প্রো।

নৌদা। একটু ভাঁড়া ভাই! নেয়ে নিই, একন্তার যাবে।

যানে)। চ ভাই! যাই দেখিগে, নরটি কত বড় কেমন চালাক। কামিনীর উপযুক্ত কি না !

## विस्तिष्टिमीत अदवभा।

বিনা। তার তোরা আয়, এত বেলা করে কি আস্তেহ্য, আমার একে করবা ধরবার লোক জোন নেই। বেলা হলো, জ্যাকে ছেলে মার্ব জামাই।

भारता। এই এসেচি कि कार्स श्राव वल, आमता मन

করে দিকি (প্রস্তুত করিয়া) এই নেও, সব হয়েচে, এখন পুরুত ও জামাইকে ডেকে দিলিই হয়।

বিনো। হরে ! পুরুতকে ডাক্ দেখি।

र्श्तिपारमञ्ज अतिम।

হরি। কেন গামা ঠাকুনোণ্, মোগার বাড়ীতে কি

বিনা। দূর দূর, শুভ কর্মে অমন কথা বল্ভে নেই। হরি। কি স্মভ কর্ম গা, এতে পেত্তা ভরে থাতি পাবোভো

বিনো। হঁগরে হঁগা খুব খেতে পাবি একন, ডাক দেখি শীগিগর।

হরি। আজে যাই (কিঞ্ছিং পিয়া) ও পুরুত্তাকুর। ঘরে আছ গা (স্থাত) বামনেদের খুব মজা, যেথানে যায়, খুব পোততা ভরে খায়, আবার পায়স। কংপড় পায়, মোগার কপালে কেবল খাট্নি, খাটি থাটি মরে গেলেও কেউ বলেনা যে। থেসে।

পুরে।হিতের প্রবেশ।

পুরো। কিরে হরে। কেন জাক্চিস।
হরি। মাঠাক্রোন ডাক্চে বলে, তাই ডাকচি।
পুরো। আচ্ছা। একটু দাড়া, থেয়ে নিই।
হরি। হা বোকা বামুন, খেয়ে নিবি, তা যাবি কি কতে।
সেখানে খুব যোগাড় আছে।

পুরো। ত তবে যাই (পিয়া) কৈ নিমি ঠাকুরুণ্ আমাকে ডেকে পাঠ্য়েচেন কেন?

বিনা। তোমবা ত আর খোঁজ থপর য়াগোনা এখন রখিতেই বা কেন, চাক্রি আছে, যজমান ত আর কিছু হয়না, বর্ত এতে থাক্তে গেলেই সরের আহ্নিক্ কতে হয়। ব্যাসাল বোসোন মদ মাধ্য ক গোবর তা

शृंदता। यादाक अकन कि तन।

বিনে। আগ কামিনীর পুনুয়ে, তাতেই ডেকে

পুরো। বেশ দেশ, সর উক্ত্য হয়েত, এদিগে নে এসে।

### कनानि औरनमा

পুরো। (কন্যাকে আনিতে দেখিয়া ষগত) আ। ছুঁ ড়িত দেখতে মল নয়। মেয়ের বাড় কিনা ? কলাগাছের মত; দেখতে দেখতে বেড়ে উটলো, সে কালের মত যদি শুরুপ্রসাদি চল্তি থাক্তো (প্রকাশে) এসো গোকামিনী! প্রদিগে এসো (হস্ত ধরিয়া ষগত) আ। গুলুপ্রত হওয়া এক রকম মন্দ্রয় (প্রকাশে) বমো মন্ত্র বলো।

মনো। ইঁয়া গো পুরুত ঠাকুর, জামাইকে আনতে হবে না, ও কি একা মন্ত্র বল্বে।

পুরো। বৈদিকের মেয়ে, জামাই না ডাক্লে ও হয়।

্ মনো। জামাই না এলে, দ্বিতীয় বে হবে কেমন করে।

পুরো। কেন জামাই না এলে ওদের ছেলে হতে পালে, তার দোষ হলো না; আর আমাদের জামাই না এলে দিতীয় যে পর্যান্ত হতে পারেনা। আর বাছা। তোমাদের জেতের জামাইরের দরকাব বড়নেই। ভবে যদি নিতান্তই ডাক্বে, তবে বরের বাপকে ডোকে আনো?

মনে। বরের বাপ এসে কি কর্মে १

বিনো। মুনি। তুই পুরুঁত ঠাকুরের সঙ্গে কি বক-চিস, একন শাঁক বাজা, জামাই এয়েচে।

পুরে!। (মন্তর পড়ার পরে) ও গো মোহিনী! একটা আংটি দেও। নাইকুঞ্ হতেআংটি ফেল্তে হয়।

মনো। আমার এই আংটিটা নেও।

পুরো। আর একটা থড়া উড়া নে এসো।

মনো। থড়াকেন গো?

পুরো। এ আৎটি ফেলতে হব।

সোদা। আৎটী ফেলতে খড়া কেন?

পুরে। বলি বরটি ভারির উপরে ভাঁড়ায়ে কন্যার নাই হতে আৎটি ফেলে দেবে, নইলেভ নাগাল পুরিনা।

"मत्ना। अई त्मल थड़ा।

পুরি। (বরকে ভদুপরি দাঁড় করাইয়া; নাই না পেয়ে) ও গো মোহিনী। এ খড়াভেও হবেনা, নিঁড়ি আমতে ইবেটি না হয় বরের বাপিকে ডেকে আন। দৌদা: ও পুরুত ঠাকুর। একন দিছি আতি যায়, কে ০ .তুমি হেঁট হও; তোমার যাড়ের উপারই চড়ারে দেণ্য: যাক্।

शुरता। जामारे २७शा जामारमहरे मारण।

মনো। না ভাই। এ ঠাটোর কতা নয়, প্রত ঠাকুর বা বল্চেন তা বড় ফিচে কত। নয়-

বৈদিকের নেথে বলে নাফি পাকে জ্ঞান।
বছসের দিকে ভাগে না করে সন্ধান।
কমার গৌবনে বর উলঙ্গ বেড়ায।
কোনগো বৈদিক নারী সতীত বিচায়।
কালন ব্যনী সেখি হেট পায় ভ্রন।
কালন ব্যনী সেখি হেট পায় ভ্রন।

সেনি। ও দিদি। তুলি অত নিলে কলো কেন। এক সম্প্র হাত্ত ধানার তালে পাছেছে: আৰু অমুক্ বেচি টোক। নিলে। কাল অমুক পাত্র ভাল নয় বলে অন্যে কালে। এই রক্মেই সম্বার শেষ হচে।

ননো। কৈ ভাই ! শেষ হয় কৈ? বরং দলাদলি বাদ-

পুরো। কি পো, তোমরা কি আগুর কথা কচে।; সে বোধ হয়, অন্যথা কতে পার্কেনা, অনেকে পেচু লেগেছে। সকলের কথা না শুনে যদি করে, ভবে শেমে ঠেক্তে হবে। মনো ! ৫ঠকুনে জি ; একখনে হবে ? হলেই বা, সেও ভাল। ও সোদো ! চ যাই, ঐ কে আদেন।

(প্রস্থান)।

আভতে বৈর প্রবেশ।

আশু: ও পুরুতঠাকুর: একনার এদিগে আস্থন, একটা কথা বলি।

शूदराः। कि वन मिथि ?

আশু। মশায়। আমি ত সম্বন্ধ করিনি, বেও দেবোনা।
আপনি কি বলেন, আমি শাত্র স্থির ও দিনস্থির করে
এয়েটি, প্রকাশ হলে খনেক ব্যাঘাত হ্বার সম্ভাবন।।
ভাই টিপি টিপি আপনাবের কেবল ঘলে রাগচি।

পুরো। আমি প্রকাশ কর্মোনা, কিন্তু সকলের অমতে ও কাজনী করা ভাল হলে। না।

' আশু। স্পায়। ও পাত্রে মেয়ে দিই কেসন করে বলুন দেখি?

পুরে। ভোমাদের "চোরে কানারে দেখা নেই সিদ-কাটী গড়া হলোঁ' সমন্ত চুকে চে। বের বেলাই গোল-মাল।

আন্ত । কেন আমি ত সম্বন্ধ করিনি, বেও দেবো না।
এত আর রাড়ি বামনের মেয়ের বে দেওয়া ন্য়, বে বে
একবার দিতে পাল্লিটি হলো, তা ছোটই হোক আর
অন্তর্জনের মড়াই হোক্; একবার সংস্কার টা সেরে নিতে
পাল্যেট হলো।

পুরো। সে যে হয়, পাশ্টী ঘর যাদের না পাওয়া ঘায়। তাদের কথন কথন ধারকম ঘটে।

আশু। আমাদের ত আর তা হবে না, নিজে গরীব পুষ্তে পার্মেনা, যে বে দিয়ে বাড়ীতে রেথে দেবো।

পুরো। বাপু। তাতেই ভয় পাচো। অমন কত গরীন কুলীন রাড়ী বামনে দুটো দশটা মেয়ে পুষ্চে, তুমি একটাতেই ভয় পেয়েছে।

্ আশু। জ্বাং কি আর মেরে পোটেয়; মেরেরা ভাদের পোটেয়।

ুরির। রাধে মাধ্ব। তুনি মুখে যা আন্দে তাই বল্চো। ওয়ৰ অন্তৰ্মান কলে গেলে নৎসার চলে না, ভোনাদের বৈদিকে কি কোন দোয় নেই।

আন্ধ। নশাস ! বাড়া বাড়িই সারশ্যক কি ? আণ্ডা-দের যা আছে, সে কেবল এই সম্বন্ধ জনোই; এই পোড়া সম্বন্ধ উঠে খেলেই সব দেবে যাত—কড পাপে যে কুলীন বৈদিকের যরে জন্ম হয় তা বলতে পারিনে—

কভ্পাপ করে ছিনু হায় রে কপাল!
নতুব। ঘটিনে কেন এমন কপ্রাল॥
জনম বৈদিক কুলে—কুলের অধম।
তাহাতে কুলীন কুল অত্যন্ত বিষম।
জনম দিবন হৈতে সম্বন্ধ ঘটন।
দশমে দিলেন পিতা বিবাহ বন্ধন!
বৈশাবে বিবাহ পাশে আবন্ধ হায়।,

ভারিত্র করিতে কিছু দংসারে আসিয়া॥ জঠর চিন্তায় গেল রজনী ়নঃ পাইকু বিদ্যালাতে বিন্দু অবসর॥ গুহত্ত আশ্রম সব আশ্রমের সার। বিবাহ নির্মাহ বিধি ভুগার ভাহার ॥ লৈশবে প্রৱেশি সেইগৃহক আশ্রম। যাতনাম অভাগার গেল এজনমঃ সন্তান ক্টালে বলে ক্বী হয় জন। না করিত্ কড় হেন মুখ আসাদন 🛭 স্তানে সম্পি দেয় এরপ ঘাতনা ! **(क्रम स्टान कट्ट लाकि महान कामना ॥** অভগোর ভাগ্য দোঘ কেমনে বা বলি। ेरिफिक काथांत्र सूथ. असूथ मकलि॥ জঘন্য বৈদিক রাঁতি ! জঘন্য আচার ! করিতেছ ছার খার বৈদিক সংসার। ভূমি না ছাড়িলে স্থা হবেনা বৈদিক। এখন আছহ নেশে, তেতারে ধিক পিক।

পুরুত ঠাকুর! যা বলাম, তা যেন আর তিন কানে যায় না; গোপনে বিবাহের উদ্যোগ কতে হবে, নিছে গোল যোগের আবশ্যক নেই। এখন আপনি যাউন, আমিও দেখি গে কি হলো।

(अञ्चान।)

ইতি তৃতীয়াস্ক।

# চতুর্থ অস্ক।

---

## चित्राष्ट्र ताकी, श्राण्डितिमानीत्रात्वतः शहतम ।

নলো। ওলো নোদের। দেখ এ মেরেটার কপাল ভাল বলতে হবে, দিন্ধি পাড্রাটা হয়েচে। **এ সম্বন্ধে** বিরে বে দিলে ওর দুরপের সীমা থাক্তো না।

সৌদা। ভাই কপালের কগা; গুরু যে অমন পাত্র মুট্রে, একি কেউ কথন মুখেও ভেরেছেলো: ঐ গুড্ডিম ফালের মাতে পালে চিরকালটা, পুড়ুতে হতো।

মনে। এখন ত বেঁচেচে বটে, কিন্তু ও একা বিশ্ চদো; এ পোড়া সহজ বদি থাকে, ত অমন কত শত মেয়ে কট ভোগ কর্মে বল দেখি, তা একটি আদ্টির অমন ভাল হলেই কি ?

শোদা। তবু ত এমনি করে দুদশটা হলে ক্রমে সম্বন্ধের মূল শিঞ্জি হয়ে গড়ে।

মুনো। ভাই। আমাদের দেশের বৈদ্কিগুলো কি মন্ত্রাকার পৃশু? কেবল আড়ার করে মাত্র; দেখে শুনে এই প্রথার পদতলে রয়েচে কেমন করে।

मोमा। अता मदन कदत्र, जीत्मादकता मानद्यत्र मदश्त

নয় তাদের যা করান যাবে, তারা তাই কর্মে; তাদের আবার ইচ্ছে কি ?

মনো। কেন তারা কি মার্য নয়, না ইন্দ্রিয় স্থা-স্থাদ পুরুবের সহে ভিন্ন ?

সোদা। সে ভাই কতবড় লোকে বোঝে; ওরা বোঝে বে দিতে পালেই হলো, তা কুলটাই হোক আর কটে প্রাণই যাক, তা আর কেউ ভেবে দেখে না

মনো। তবে এখন অনেক বিদ্যান্ হচ্চ ; বোধ হয় আর কুস্কার বাসা পাবে না।

সৌদা। ও বিদ্বানের কপালে আগুন দিদি। যারা মনের দমন কতে পারে না, তাদের আবার বিদে কি।

মনো৷ তুই ভাই! অত চট্চিদ্কেন? বসে বসে মজাদেখনা?

দ্যাদা। দেখ ভাই। ঐ নে দিন একটা নেয়ে অ-ন্যথা কলে, তাই বলে ঐ পোড়ারমুকোরা বলে উট্লো যে ও নান্তিক, নেয়েটা বেচেচে নইলে অন্যথা কলে কেন? পাত্র থাকতে কি কেউ অন্যথা করে?

মনো। আবার কবে কার মেয়ে অন্যথা হলোরে, তার পর তার কি হয়েচে?

সৌদা। তাতে কিছু হয়নি; বলি একবার পোড়ারমু-কোরা বদি সে দিগে চেয়ে দেখে, তবে আর মেরে গুলোকে কফভোগ করতে হয় না, নানা দোষেও দূষী হতে হয় না। भागा। "दिए जीवात (माय कि?

সে। দোষ কি জানিস্নে, প্রায় একপুরুষে করে তফাত পড়ে।

মনো। ভাই। ভোর ওকথা ভাল বুৰতে পালেম না।
সোনা। বলি। দেখনা ভাই। ঐ যে মেয়েটা অন্যথা
কল্লে, ওটার যদি ভাকদের সজে বে হতো, তবে কি
হতো বল দেখি ?

गता। अक्न ?

সোদা। ভার ছেলে হলো, কিন্তু ভাকরের আজো গৈতে হলো না এবং ওকে কোলে করে তুলে ভাত খাও-য়ালে ভাল হয়।

মনো। তবে ওদের দূটিকে একত্র কলে বাপনিয়ের মতন না দেখায়ে ঠিক ভাই বোনের মতন দেখাতে হয়।

সোদা। যে গুলো হয়, তাত ভাই বোনই সতি।।

মনো। তুই বোন কেবল গালাগালি কতে আরম্ভ কলি, তবে ভারও ভ ঐ দোষ আছে।

সে)দা। বোন। গামি কি কুলীন, মনে করেচিস্ বুঝি, আমি ভাই। অন্যপূর্মা।

মনো। তুই ভবেত বেশ আছিন্ তোর কোন দুখধুনেই।

भोगा। यामात छोटे य मृथ्यू; डा स्वर्टन समग्र क्टिंगात्र।

মনো। কেন, তুইত আর কুলীনের খরে পড়িসনে ?

্নৌদ। • আমার যে তার চেয়েও অধম, কুলীনের।
ত দেখা পায়, আমি তাও পাইনে।

মনো। কেন সেকি বারমুকো নাকি?

(मोम्। इं। शिक्षा निमि! ठाइटळइ कशान शूट्डि।

মনো। সে-যে ভাই। সকলের টেকা; ভাল আছে থেতে দেয় না, আর ভাল পায় না, ঢের তকাত।

स्मिष्ट कि कटर्ति । हात् ७ किहू त्मरें , कार्य कार्यहे कर्ते महे :

মনো। তোর কণ্টের কণ, শুনে আনার হৃদ্য কেটে যাচে, তুই ভাই। অভ ভালমানুম, তোর কপালটা এমনি পুডেটে; যে ভাল পরিত জন্মান্ম।

নোদা। আমার ভাই। বাহোক, তায় ভারিনি, আনাদের সকলের দুর্দশার শেষ হলেও অনেক সুখী হই।

\* মনো। ভাই সবুর করনা: ''সবুরে মেওয়া ফলে অকরকন যোগাড় ত হচে, এই বেটি হলে ভারা নালীশ করে টাকা নেগো বল্ছিলো। নালীশ কল্যে এখন একটা যাহর হয়ে যাবে।

त्मीमा। धक्छै। यो इंस इटल इटव - cकम ?

মনো। বৃঝিদনে ? ও দুনিগেই লাভ। এবার রামে মারুক আর রাবণে মারুক, এক জনের হাতে মতে হবে। সৌদা। কেমন করে দিদি ?

মনো। সকদ্মা যদি ডিসমিস হয়, তবেত কথাই দেই, সমুস্ক ত উট্লোই; আর যদি ডিক্রীও হয়। তথাপি শবন্ধ করবার সময়, ঘর বর ভাল করে দেখবে এবৎ একটা নেখা পড়ার স্থাটি কর্মে।

সৌদা। হঁট ভাই। সম্বন্ধ কন্তেও তবে **ফাম্প** লাগবে। রেজিউরি কন্তে হবে না কি?

মনো। একটা লিপি মাত্র হবে, তাতে কি জার রেজিউরি কর্বে, না দাক্ষী দেওয়াবে; তা কিছুই নয়। আর ওকথায় কায্ নাই, চল বে হচ্চে দেখিলে।

(金寶四1)

### পাঁচশালা। ওরু উপস্থিত।

গুরু। (সদারপোড়োদিগকে ডাকিয়া) ওরে বিপিন্! পরশু আশুর মেয়ের বে হয়ে গেচে, বিদায়টা আছ-সান্গে দেখি।

বিপি। আজে যাই—ওরে তোরা যাস্তো আর ওর্ নশার বিদেয় আনিগে, আয় আস্বার সময় নতুন একটা খপর বল্বো একন?

রসিক। বলনা ভাই।

বিপি। বলি এ তর্কালকারদের বাটিতে একটা হেলে হয়েচে।

রস্কি। তার আর নতুন খপর কি?।

বিপি। করের ভেতর কান পাতা যায় না, নতুন কি?

त्रिक । कि इस्प्राट, उत्व का मा।

विशि। थे देवहिक्तहत्र मध्य रश्न, क्रांनिम्रक्।

্রিবক্। ইটা তা কানিঃ তার আর কি হয়েছে, বল দেখি।

বিপিন। যেই সম্বন্ধ্যে মেয়ে গুলো বয়রর মার মতন
 হয়ে থাকে, জানিস।

রসিক। তোর অত বক্তায় কায্ কি, বলে জানা কি হরেছে।

বিপিন। সে সেই একবার বে কতে গেছেলো, আর একবার অনেক কটে পুরুষে কত্তে যায়।

রনিক। তার পর আর যায় নাই কেন?

বিপিন। যাবে কি ভাই। বৈদিকের ছেলেরা মাগ্ দেখে ওয় করে, ও লজ্জ। পায়।

রসিক। দ্বীর দেখে আবার সজ্জা কি ?.

বিশিন। বৈদিকের ছেলারা দ্বীবলে জান্তে পারে না ভারা হলো দূজপোষ্য ও মাগ্ গুলো হলো মাগি, ভাতেই কলো করে।

রসিক। ওদের ত ভারি কট তবে ?

বিপিন। কটের কথা বল্ডে কাঠের পুতৃলের ও চকের জল পড়ে। ভারপর আজ দুদিন হলো তার ছেলে হবার থপার এয়েচে।

রসিক। সভিয় নাকি? ভোরা সকলে ওকে ধর্না, বল ভোর ছেলে হয়েচে খাওয়াতে হবে।

विभिन। जामहा क्यन करत बन्दा, उत्मन्न जनी हिल्लामन बाल (मञ्जून याक, मन्नो हेर्द अर्थन १।

### ( ছोक पिशतक व्याख्यांम )

ওরে তোরা ঐ কার্দ্ধিকের কাছে খেতে চানা গে। **इ**। दिन ७३ कि इस्ट्रिक १

বিপিন। ওর ছেলে হয়েচে, টাইলেই খাওয়াবে এখন :

ছাত্র। (উপস্থিত হয়ে) ও কার্ত্তিক। ও কার্ত্তিক। कथा कम्द्रम् (कम् १

कांश्विक ज्यागात क थे किना स्यान वरण, अब मनाय वफ्एहे दरकर्छन, व्याध्य क्यं श्व छ। इही व्यक्षत हिस्स मिएउरे हात।

ছাত্র। আঞ্চ খাক: তোর ছেলে হয়েচে, এবার খাওয়াতে হবে, তার কি বল।

चनाइति। शादि छाति कि विश्वस्ति।? करि श्राक्टला (द ?

ছাত্র। বেই যেন হয়েছেলো, তুই ত ভাই! কখন শশুর বাড়ী যাসু নাই: ভোর ছেলে হলো কেমন করে?

कोर्डिक। यो यो जामि এখন তৌদের সঙ্গে कथा क्हेए भाविति।

(বিরওক হইয়া প্রস্থান),

বিপিন। ভাই! শুনিচিন এমন কত শত হচে, তা दिना करनक एवं एएएथ, किन्नु निष्कृत दिना काना हत्र तूबि, ह छाहे। विरम्प्त निर्ध याहे।

केल्ल एडर्स खता ( नकरमद्र धार्म)

## পঞ্চম অঙ্ক।

### ----

জমীদারে প্রাটি। তর্করত্ম প্রস্তৃতি বৈদিকগণ ও জমীদারের প্রবেশ।

তক'। মশায় ! আমাদের এই বিষয়টীতে মনোযোগ কতে হবে।

পনী। নশায়! আমাকে তার ভেতর জড়ায়ে শেষে সকলে সরে দাঁড়াবেন আমি শেষে কোথায় নাকী, কোথায় থরচ, তাই করে বেড়াই আর কি?।

তর্ক। আপনাকে কেবল শারীরিক পরিশ্রম কত্তে হবে; আর সব আমরাই যোগাড় করে দেবো।

জমী। ও কথা কি শেষ থাক্ষে ?

তর্ক। আমরা কি আপানাকে নাবিয়ে দিয়ে নিশিন্ত থাকুতে পারি?

জমী। আশ্রুধ্য কি ? তুমি একা কি করে, কিন্তু এই মহাস্থাদের কথার আমার বিশ্বাস হয় না। যদি আপ-নারা নিশ্চয় করে বলেন, তরে হাত দিতে পারি। কেবল তোমাদের থাতিরে হাত দিচি।

তর্ক। উদয়তি যদি ভারঃ পশ্চিমে দিয়িভাগে তথাপি একথার নড় চড় হবে না আমরা যাই। জনী। তবে তাই হবে ( বৈঠকখানায় উপস্থিত ন্যায়-রত্বকে নম্বোধন করিয়া) কেমন ন্যায়রত্ব ! এগুলো গহিত অন্যায়- এর নিবারণ চেটা উচিত।

ন্যায়রত্ব। কি বলেন মশায়। এটাকে আপনি গৈছিত আচার বলেন, এত একরকম উত্তম কাজ, এৰপ অপবয়স্ক বালক বালিকাদিগকে পরিণয়স্থতে আবদ্ধ করা কি যুক্তি সিদ্ধ: না শাস্ত্র সম্মত? নই ত স্পটি লিখেচেন

া লিংশংবাহে। বড়েছ কনাটি স্থান স্থানশ নাইকীর। আটবর্ষেইটব্যাল, পর্যো নীস্তি সাহরং'।

(जिन १९२३ नग्नुक शुक्क घाएन वधीय। **७ ठिका वर-**नवरहक शुक्क्य ककंववींद्री कन्मात शानिखर्ग क्रिट्ट ।)

জমী। নানা তা নয়, আমি ও শাব্র ফাল্র বুঝিনে, এমন কি কথন হয়ে থাকে না কথন ব্যাভার আছে; আজ চৌদপুরুষ যা করে পেচে, তা এখন শাল্র হলো না, তবে তারা সব মুখ্যু ছিল, আর এখনকার ছোড়া-রাই বিছান ও বুদ্ধিয়ান হয়েচে:

ন্যায়। মহাশয়। ব্যবহার কি আর গাচে ফলে, না ক্ষেত্তে জন্মায়: যা দশ জনে করে তাই ব্যবহার।

জমী। তুমি ত মুখে এলো বলে কেলে; দশ জনে করে কৈ? এখন পথে এস, দশজনে যা করে, তাই কর! তা হলেই ত গোল চুকে যায়। ন্যায়। জনীদার মশায়। আপনি যে দশ জনের কথা বলচেন, সে ৰূপ দশজন নামুষ চাই; তাতে নমুষাত্ব থাকা চাই; জন কত উদরিক কবির কথায় নাচ্লিই হয় না।

জমী। এত তোমাদের বৈদিকের বই অন্য জাতির' কথা ত হচ্চে না, তোমার জাতিরা যা বলে, তাই কর।

ন্যায়। আমার জাতির মধ্যে যাদের যথার্থ মনুষ্যন্ত্র আছে, তারা কথনই ইহাতে অনুমোদন করবেন না।

क्यो । जूमि थे हे दोन (धंना करें। देविपत्कत উत्तर काला छता छ এक तकम श्रीन, छत्र। कि धर्माधर्म माति?

ন্যায়। মশায়। বলতে গেলে রুই হবেন, ওরা ধর্ম মানে না? তবে কি থাদের ইন্দ্রিয় দমন নাই; যারা পেটের জন্যে অতি কুৎদিতকে স্থাদর, মূর্খকে পঞ্জিত, ও যে এক পয়সা দেয়, তাকে কর্ণতুল্য দাতা করেন, তাদিগকেই কি আপনি ধার্মিক বলেন।

जनी। ७८१। जूमि य वर्ष मश्च लश्च। कथी करकी;

मिन कर्छ श्रंकुशीर्य मिरफ़ क्टरफ़्ट दूकि उर्करृष्मिमि इरस्

शिरफ़्रहा। मि कि मान करति ? या मिरस्रो तिरुष्ठ मिरफ़्रहा। कि मान करति ? या मिरस्रो तिरुष्ठ मिरफ़्रहा, व कि कम जान्श्रमात कथा; जामता था क्रिक था क्रिक वर्ष मिरफ़्रहा वह मिरफ़्रहा कार्या कि मान वर्ष वर्ष है मिरफ़्रहान या मान करति जाहे क्रित्र । मान करते वृक्षि। मारम् कारक कारक शास्त्र मान करते वृक्षि मारम् कारक करते था मारम् करते वर्ष कि दूक्षि मारम् ना, ना मारम् करहा जम्म करते शास्त्र ना।

ন্যায়। মশায়! সে মেয়ে বেচেনি, আঁসাদের কাছে শপথ করে বলেচে, আর তার আম্পদাই বাকি?

জমী। (ক্রোধে) তবে সে কল্লে কেন? টাকার লোভে বই, আর কেন কর্মে?

নার। মশায়! আপনি মনে ভেবে দেখুন নেথি, যে এ পাত্রে কন্যা দেওয়া বায় কি ? কন্যার পিতা নিজ তন্যাকে লালন পালন করে কি প্রকারে জলে টেনে কেলে দেবে। যার জনসংস্থান নাই, তার বিবাহে প্রয়োজন কি ? লেকে কথায় বলে "ভাত নেই তার ব্যা"।

জ্মী। ওর বাপাকে যে কনা দিয়েছিল, সে কি মেয়েটীকে কলে ফেলে দিয়েছিলো; না, তখন তালুক মূলুক ছিল ? এখন নাটে বিকিয়ে গেটে। ওহে ন্যায়-রত্ন ! ও বি কাজের কথা দুশ আড়াইশ টাকার লোভ ছাড়া বড় সহজ কথা নয়।

ন্যায়। রাম বল!। (কর্বে হাড) নেয়ে বেচা কি সামান্য পাপ, যারা মেয়ে বেচে, তাদের ইংকালে ও পরকালে কোন কাকেই নিস্তার নাই; ইং লোকে নিন্দা হয়
পরলোকে উদ্ধার নাই, চিরকাল নরকে থাক্তে হয়।
নেয়ে বেচা কি ভয় লোকের কাল।

জনী। সে কি লগনাথ তক্পঞানৰ নাকি?। যে গভালৰ ভাষা তুলসি ছুয়ে মেয়ে দেবো বলে, বাগ্ৰাৰ করে; বে'মেরে অনংখা কত্তে পারে, সে কি মান্তব, না ভার অসাধ্য কর্ম আছে ?

ন্যায়। সে সম্বন্ধ করেনি, এবং তাহার সম্বন্ধ কত্তে মন ছিলনা, অন্যে জোর করে তার মেয়ের; নাকি সম্বন্ধ করেছিলো।

জমী। তুমি যেমন হাবা, তাই তোমাকে বুঝয়ে যে, তার মেয়ে, পাড়া পড়িনিতে জোর করে সমন্ধ কলে, এও কি বিশ্বাস যোগ্য কথা, লোকের কাছে বলোনা।

ন্যায়। নশার। আমি শুনিটি যে ওরা যার ওপানে কর্ম কর্ত্তো, তিনি নাকি বড় লোক ছিলেন, তিনিই সম্বন্ধ করে এসে, পারে মাইনে দেবার সময় বলেদিলেন ভোর মেয়ের সম্বন্ধ করিটি, তারির খরচ ৪ টাকা ভোর মাইনে হতে কেটে নিলাম, এই রক্ষে সম্বন্ধ হয়।

দ্মী। সকলেই ত ঐ রক্ষ কচ্চে, তাদের কি আর বোঘ নেই, না তাদের বিসদৃশ হয় না, না তারণ সকলেই বড়মান্সের ছেলের সঙ্গে সমুদ্ধ করে? তোমাদের দাকিগাতা বৈদিকে বড়মানুষ কটা।

ন্যায়। মশায়। তার কারণ ত কুল সম্বদ্ধ: ওড্ডিম না ভাংতে ভাৎতেই বিবাহ হলো, কিছুদিন বাদে সম্ভান হলো, সংসার নিয়ে বিভ্রত হয়ে পালো, তাদের উন্নতি কি আশা করা হাইতে পারে?

ক্ষী। তুমি যে দেখতে পাই, ও দলের একটা প্রধান গোঁড়া হয়ে পড়েচো; তুমি কাত হও; ভোমরাও নৰ বিষয়ে হাত দিয়ে কাজ কি ? শীণিগরই এর একটা পাকা পাকি কতে হবে, নইলে নাই পেয়ে যাবে, আর কেউ কাকে মান্বে না ?

ন্যায়। আমি মনে করেছিলান, তুমি একজন বিচক্ষণ প্রজাহিতিলী জনীদার, তোমার দেশের প্রতি সাতিশার মমতা আছে; তোমার কল্যাণে প্রজাদিগের কোন কট নেই, উত্তম রাস্তা ঘাট করে দেকেন, কিন্তু মে সর্বে দিয়ে ভূত ঝাড়াবো মনে করেছিলান, সেই সর্বের ডেডরেই ভূত।

विश्वां खनिशी यख देवित्कत मन ।

क्षित्वाद करत त्मर खानिया ना ॥

नाशित्वाद भर्य क्षेत्र भिनिक्ष का ।

मूर्यमात यम किन्द मिनिक्षि जीन ॥

दर्भाषित करत्य भरत हिन्दु ग्रामी छोम ।

कार्यात खानां होरत ममंद्र खानि ॥

मिनद्र प्रयोग महत श्रामिक खान ॥

विमान् मा निमानकात मन्द्र श्रामिक खान ॥

विमान् मा निमानकात मन्द्र शाहि ।

दर्भ कार्य कार्य द्रमें कार्य शाहि ॥

कार्मित केंद्रमें कार्य कार्य द्रमें कार्य छोड़ि ॥

कार्मित केंद्रमें कहिंद्र मार्थ दर्भ कार्य छोड़ि ॥

कार्मित केंद्रमें किंद्र मार्थ दर्भ कार्य छोड़ि ॥

दर्भ मार्थ प्रयोग गाहि हम् ।

कार्मित केंद्रमें किंद्रमें स्थान द्रमान ॥

कार्य पर्मात कार्य कार्य छोड़ि छोड़ि ।

दिनिक कूर्य भरण खन्मान व्यव ॥

देविक कूर्य भरण खन्मान वर्य ॥

\*\*

असी। नामात्रका जूमिया वम्दना, त्म त्य अस्ति

শান্তার কথা; যে যা সনে করতে সে তাই করতে, আর শানতা চুপ করে থাক্যো। (সজভেজে)ওহে কে আছ হে; সকলকে সংবাদ দেও ত, যোগ আজ ৪ টার সময় শকলে একজ হয়। এর একটা সমূচিত কতে হবে। ন্যায়। মহাশায়! যাহা ভাল বোধ করেন করুন, আমি চলাম।

( अश्वाम ) ।

मान्यामा भारतन ।

ছার। ছেলান পৌছে মহারাজ। ক্যা ছকুম।
জনী। বামন ঠাকুর কে বোলানে হোগা? কেচকো
সমজে ?। জলদী লেয়াও। (প্রস্থান)।

आफान मम्कियाशिय बादवात्वस श्रेमः अत्वन ।

বার। নহারাজ। ঠাকুর জী তে। আরা :

(াজ্য ম

জনী। এস ঠাকুর: প্রণাম: গ্রামস্থ সকলকে খবর দেও বে তাঁরা যেন অদ্য আমার বাটাতে আসিয়া উপত্তি বিষয়ের সমূচিত ব্যবস্থা ভির করেন।

বাকাণ। যে আজে। তবে চলাম (ৰগত) আগে বাচস্পতির কাছে ধাই, তাঁবা অনেকের জাভ মেয়েচেন ও জাত দিয়েচেন। (প্রস্থান)।

বাচন্দাভির বাটা। ভূসাপদ ওপস্থিত।

দুর্মা। রাচক্ষাতি খুড়ো! বাড়ীতে আচেন?

### वाहनम् जित्र । श्रेटत्रम् ।

বাচ। কেহে? (দেখিয়া) এম বাপু! কি মনে করে ।
দুর্গা। মশায়! আশু ত মেয়েটি অন্যথা করেচে,
শুখন জমীদার মশায় আপনাদের সজে পরামর্শ করে
তারির কোন উপায় কর্মেন, তা আপনাদের পার খুলো
দিতে হবে।

বাচ। স্থার কে কে যাবে ?

দুর্গা। তিনি ত সকলকেই ডাক্তে বলেচেন।

বাচ। বাপু! এ কি ফলার, তাই ঢালা নেমন্তর্ম কত্তে বলেচেন; মাতালো মাতালো লোক নিয়ে এর পরামর্শ কৃত্তে হয়।

দুর্গা। আজে, তাই বলিগে?

( ভূমিষ্ঠ स्टेग्रा अनीमानएत धार्षाम )।

तार। (शङ्गीतक भरत्राधन कविश्व) अस्त नौजून वो! बाब् नकाल नकाल तान प्रिथ, श्रिट्स नजाश याद्य स्टबं।

(म) जूनरहीत थारवण .

নতু। তবে আজ স্থপ্তাত। সন্দেশটা আশটা মিলবে একন ?

वाह। श (काणि! अ कि आदित निमल्दात निमल्दात निमल्दात निमल्दात निमल्दात ।

নতু। তবে আবার কি রক**ম সভ**।।

वाष्ट्र। त्महे चाला त्य (मद्य चनार्थ) करत्रहरूला,

ভারির জব্দ ধরবার জন্য, এই বারে বেটা জব্দ হবে, এখন। যাভাত তমের করে দে, আমি স্নান করে আদি।

( अश्वाम )।

্ত অপরাত্ন। জমীদারের বাটা। ভর্কালস্কার বাচাপাতি প্রভাতি। সকলে উপস্থিত।

ভক। মহাশয়ের। যথন উপস্থিত ২নেচেন তথন অসাথ্য কি আছে। এত সামান্য বিষয়।

বাচ। আমাদের সাধ্য কি । এখন আর ত দো
কাল নেই, যে একঘার কর্মে। এখন আর লোক
ভাতে জন হয় না। ভাতে আহার সেই আশু, সে
নাকি বছরে দশবার খাওয়াচেচ, তাই ভার বাড়ী না গেলে
সে অপমান হবে। জনীদার মনে করে যদি চেটা
করেন, তথে ভার বিলক্ষণ জন হবার সন্থাবন।।

ভর্ক। তবে কি জমীদার মশায় তার ব্রহ্মতর কোক কবেন, তাও তার নাই।

বাচ। না হে .., বিবাহের ক্ষতি পূরণ জন্য একটা দারি দিয়ে আদালতে একটা নালিশ করে দিন।

জনী। তাই উত্তম, এখন আর কিছুতে জন্দ হবেনা। পারশু দিন ভাল, এ দিনই সকদ্যা রুজু করা যাবে। এখন সন্ধ্যা হলো আপনারা স্ব আস্তম।

সভাতক !-- ( সকলের প্রস্থান ) ৷

े हेळि भक्षम श्राप्त ।

# मर्छ जहा।

#### ---

মূনসেকী আদালত। উকীলের চাল।। তর্করন্ধ, ম্যানেকার ড উকীলের প্রানেশ।

উকী। **আস্তে আজা হোক্**; আজু তা কি মনে করে এয়েচেন ?

ম্যানে। নশার। একনি মকদ্যা আছে। এখন আশ্চয্য মকদ্যা কথন করেন নি।

उँकी। भिक?

ম্যানে। এই বাননের (দুর্গপেদকে দেখাইয়া) ছেলের সজে আশু চক্রবর্তির মেরের সম্বন্ধ হয়। এখন আশু মেয়ের অন্যথা করে বে দিয়েচে। তারির ক্ষতি-পুরণের একটা নালিশ কত্তে হবে।

উকী । দুটো চাটে সাক্ষী দেওয়াতে পার্মেন্ তো ? তক । মহাশয় । সাক্ষীর ভাবনা কি ? আমরাই আছি । দুর্গা । মশায় ত সর্মন্ত ককেন ও কর্মেন ।

ন্যানে। ওছে ওলব একন রেখে দেও, যথন এর ভেতর এনেটো, তক্ত্র অপনান হতে পার্ফো না ? (উকি-লকে সম্বোধন করিয়া) চক্রবর্তী সশায়। একন্ আর্জি লিখে দাখিল করন্। এর পর বারবেলা হবে। (লিখন)। ুতুর্ক । মহাশয় । স্থামর যা ফর্দ করেছিলুন, তার টেয়ে যে অনেক লাগবে।

ম্যানে। আপ্নারা বামন পণ্ডিত নোক, ক্থন ত মামলা মক্দ্রমা করেন নি, এত খরচের স্বভিবাচন: এখন চল যাই।

(প্রস্থান)।

एकुनाथ नांकिरियोदसङ खटनम !

যদু। ্ছে। তেমোরা সব কোথা গেছেলে? ফলার পোটে ছেলো নাকি? উত্তম নগ্যম না অধ্যং কোনুরক্ম ? তর্মর গুরুতির অধ্যেশ।

उर्क। ना (इ.ना, अकला ना जिला करल का इस्ति हु या अहा इर सरहरता:

বিদু। কিসের গাঁ ? এত বৈদিক দেশে আমারত আদ্ধ ংবেখি হয়েছিলো।

় তর্ক। এক জনের আদ্ধাবটে। তুমি কি শোনো নি ? আশু তার মেয়ে অন্যথা করেচে ?

যদু। তার আদালতে কি? সেথানে ত আর ফলার নেই যে, বৈদিকের ঘারি যুবি খাটবে ?

उर्के। हैंग दि छोत्री! अत्मक मिम हाँग्रेडि, कल-आत उ तमश्री मा, माकीत अवावसी ऐसी नव हत्य श्रीटंड, आवात तम 'त्मरत्यत मंड मार्च बत्न' अक मत्रशास्त्र करत (हत्ना, जांड क इत्य अत्यक्त ; किन्ह हकून त्मरक मा कमने क्वल हाँग्रिया मार्स ষদু। সম্বন্ধের নালিশ, তার পাকা দলিল কিছু আছে প

उके। श शांत्रम ! **म**श्रदक्षत्र कि मिनिन शोदक ।

যদু। যথন নালিশ হতে চল্লো, তথন তার দলিল কি তার রেজিফীরি পর্যান্ত চাই।

তর্ক। না হে ভারা জাননা, একবার একজনকে না জব্দ কল্লে কুলরক্ষা ভার হয়ে উঠলো।

বদু। তোমাদের সহিমা বোকা ভার। তোমরা সূত্র দেখাও, বারণও কর।

্তর্ক। ভূমি যেটা মনে কচ্চো, সে পাত্রটা দেখতে <u>দেলার</u> মতঅতি ছোট ছিল, লেখা পড়াকিছু জান্তো না।

বত। তবে এইটি কি জগয়াথ তক পঞ্চানন নাকি? এওত সেই রকম, তোমরা যে কখন কার প্রতি সদয় ও কখন কার প্রতি সদয় ও কখন কার প্রতি রুমি কেউ,হয়, নইলে এত জেদ ক্যান?

তর্ক। দেটা কেউ হোক আর না হোক; এ পর্যান্ত যদি যত্ন না করি, তবে সকলেই ত এ রকম কর্মে?

বছ। বাকি কে? প্রায় ত সকলেরই হয়েচে। আজ বিদ্যানিধি অন্যথা কলে, কাল বিদ্যাপঞাননের ডাই কলে, পারস্ত মূড়ামনি নিরোমনি, ভায় দোব নিই, ভবে এ পুঁটে তেলিতেই যত দোষ। ভোগাদের আপনার বেলা ''মাকড় মালে ধোকোড় হয়" আর পারের নেলা ১৬ কহিন প্রায়শিত।

्र के की यमू आया। प्रमेटन किन ? किरन कि इस मधना ক্যান, তোমাদেরই ভ ভাল, অন্যপূর্কা না হলে আর তোমর নিখরচা পাবে ন। তো?!

যদু । লায় ! এখন আর নিকডে কৈ ? ওজোনে বিকোর যে, তা জানেন না ? কত অমন অন্যথা করে বেচেচে শুন্তে চান, কেউ বেচবার জন্যে, ভালুক ঘরে, **मिश्राम नम्म कर्त्र अरहि वर्त्व, भारत अनाश्रर्की** বলে বেচেচে, তাকি জানেন না।

छके। अहे बात तथरक वन श्रव छ ?

यमु। मिएं किन जांड बांड करका, किन्ने रूख मा, কেবল কর্ম ভোগ সার । আর মিটে এই জমীদার মশায়কে क्के निष्ठा, श्रांक धनावाम, छैनि म्हान हिट्ड बना যে যা বাল তাই শোনেন, (জনীদারকে সয়োধন করিয়া) মশার। কেন মিচে ক্ট নেচেন, এদের কি কিছর স্থির क्रोटिं। "द्वाटि छोत्र, मिरन टिट्ट "

রাগি টি তরবী তাল জাদ্রা।

মিছে কেন গোল কর সমন্ধ অন্যথা বলে। অপমান হতে হবে মকদ্বসায় হেয়ে গেলে। যা বন্ধ সে কথার কথা রাখিতে সমন্ধ প্রথা কাহার আছে যোগ্যতা পিতা না সম্মতহলে॥

শাই তথে।

( সকলের প্রস্থান )।

### कामानक । भूमरमरकत शतका

মুন্সেক। সেরেন্তাদার। ৫০ নম্বর মকদ্রনা পোশ কর, আজ ওটা নিপ্তাতি কর্বো।

**भ्यास्त्रकामाद्वतः खोर्**गणः।

সেরে। ধর্ণাবভার। ঐ মকদমাটাও অনেক দিন পড়ে ছাছে (পেরাদাকে ডাকিয়া) পোরাদা। উকীল ও দুর্গাপদ চক্রবভিকে ডাক।

(श्रामात केरवन ।

পেয়া (উলৈঃমরে) দুর্গাপদচক্রবন্তি হাজির, ছুর্গা-পদ চক্রবন্তি হাজির ?

भूगीलरम्ब धारत्म ।

দুর্গা। চরবন্ধি মশায়। চলুন মকদমা পোল হয়েচে। ।
উকী। কৈ বাবুরা কৈ, আমার মেহরতের চাকা কৈ, /
সুদু আলীঝাদে কি মামলা মকদমা হয় ?

মুন। সেরেস্তাদার। আর্কি পড়।

সেরে। (আর্জি পাঠ)—

रामी।

প্ৰতিবাদী।

শ্রীদুর্গাপদ চক্রবন্তি।

শ্রীপাশুডোধ চক্রবন্তি

21/2-9/2-

36/9- 9/2-

### मानि-

## ক্ষতিপুরণ ৩০০০টাকা-

সমাং ৬২ শালের বৈশাখ মাহাতে আমার পুত্রের শহিত প্রতীবাদীর কন্যার বিবাহের সল্পন্ধ স্থিরতায় জাত্যাণশের ধারালুশারে
বাকদানাদী হয়, তদপর প্রতীবাদী ঐ শল্প সন্যথা করিয়া
শন্ত ২৪ আহায়ণ তারিখে আমার পুত্রের শহিত
বিবাহ দা দিয়া ঐ কন্যা স্থানান্তর বিবাহ দীয়াছে আমার পুত্রের
আরু গ্রহুলা কুলীণ কন্যার শহিত বিবাহ হইবেক না পোণদীয়া
বংশজ্ঞ কন্যার শহিত বিবাহদিতে ইইবেক ওদহেতু আমার মানের
হানী ও পুত্রের বিবাহজন্য ফ্রি প্রান্থে নালীশের কারণ হই—
য়াছে অভ্যেব তাহার বেশারও০০০ টাকা পাইবার প্রার্থনায় ব্যালিশ
ইতি।

मुन। জবাৰ পড়।

**৫০ন**ং

### मामा ५५५--

खाँखेरांनी चा छएए!न छक्तचीत भरकत वर्नम्थत ४

- ১। আইনান্শারে বাদীর প্রশাশত বাক্দান এমত কান্ট্রাক্ট নহে যে তাহা আদালতে বলবত ছইয়া পেসারার দাবি হইতে
  পারে।
- ২। বাদীর পুত্রের শহিত আমার কন্যার বিবাহ ইইবার আমী বাক্দান করিনাই এবং আমার অভিনতে স্বন্ধ ইয় নাই।
- ৬। শন১২৬২ শালের বৈশাধ মাহাতে বা তৎপুর্বে আমার কন্যা জলেম নাই।

<sup>\*</sup> ক্রিড জাদালভের ক্রাধা।

- ৪। বাদীর পুত্রের শহিত আমার কন্যার বিবাহির সম্বন্ধ আমার কৃটদের দারা হইয়াছিল কন্যার বয়ক্রম শনঃ২৬২ শালের অনহায়ণ হইয়া দাদশবর্ষহওয়া বয়প্রাপ্তা কন্যা ঐ পাত্রের হিনাবস্থা ও অব অবের শহিত বিন ভ্রতায় কন্যার অনভিমতে ঐ পাত্রের মহিত বিবাহ নী হইয়া ঐ পাত্রাপেক্ষা উৎকৃট পাত্রের শহিত শাত্রাস্পারে বিবাহ ইইয়াছে।
- বাদীর পুতের বিবাহ আমার কন্যার শহিত নাহ ওয়ায়
  বাদীর কৌলিণাের বা মানের হানি হয় নাই এবং বংশজ কন্যার
  শহিত বিবাহ দিয়: ১ইলেও আমাদীগের কুলাচার ফতে পণ দিতে
  হয়না নেমতেবাদীর কীছুমাত্র কতি নাই।

  ইয়িল শন১৮৬৭।

সেরে। (জনানস্পাচ)—বাদীর মানিত ১নং সাকী হ্জুরে হাজির আসিয়া আইন মতে প্রতিপ্তা করিয়া এজাহার করে যে আমার পিতার নাম—আমার নাম—শাং—পং—ন্যেম ৫০। ৬০ ফাতি চাসাধোপা। উভয়কে চিলি, কোন এলাকাদার নির্ছ্থাত চাসাধোপা। উভয়কে চিলি, কোন এলাকাদার নির্ছ্থাত মধ্য করেছেলো। সওয়াল মতে কহে, তপায় ছিলাল স্পন্ধ শান্তীয়, কোন শান্তে আছে জানি না। কন্যা অন্যথা হলে পাতের মানের হানি হয়। কুলান কন্যার সহিত আর বিবাই হয় না। বিবাহ রায়সাধ্য বটে, কজলাণে স্থির নাই। বাদীর ২ নং সাক্ষী আইনমতে প্রতিজ্ঞা করিয়া বলে, সম্বন্ধ সময়ে আমি ছিলাম না, কিন্তু তত্ত্বাহাম কন্তে ও বেহাই বলে ভাকুতে দেখিচি। সম্বন্ধ শান্তীয় বটে, দেখুন সকলেরই হচ্চে; গৌরীর বিবাহেও নারদ সম্বন্ধ করে যায়। শান্তেও এমন বিধি আছে যে এ বাগুদ্ভে কন্যা কি পুত্র মরিয়া গেলে পরস্পারের তিন রাত্রি অংশীচ নিতে হয়। বংশজ কন্যার সহিত বিবাহ দিতে কখন ব্যয় লাগে

কশন লালেও না। আর বাদীর পুত্রের বিবাহ ছওয়াও জ্বর।
বাদীর ও নং সাক্ষাও বলে, আও সম্বন্ধ কবেতে দেখিচি,
কন্যাও ছুট। একটা অন্যথা হয়েচে কিন্ত তাদের লাতি পাত হয়
নাই। পাত্র অন্যথা হলে কন্যা ঘৌলিকে পড়ে, কন্যা অন্যথা
হলে পাত্র বংশত কন্যার পানি গ্রহণ করে। এরপ প্রথা আছে।

মন। আনামীর সাকীর এজাহার পড়?

সেরে। স্বাস্থানীর ১নং সাকী আইন মতে প্রতিক্ষা করিছা।
বলে যে আমার নাম—শাং—ভাগি কাচারো কোন এলাক।
রীপিনা! আত্ মহন্ত করে নাই; মতও ছিলন । সল্বন্ধ শান্তসমত নহে। বৈদিক জাতির অংশত। বিধায় পাত আটকাইতে
আট্কাইতে এইনপ সম্বন্ধের হাটি হুইয়াছে। বংশল কন্যা বিবাহ
করিতে পার ভাল হুইলে টাকা লাগেন।। প্রতিষাদীর ২নং সাকী
ও ত্রিমপ বলে আমার পূবের বিবাহ ক্লিম্নির হালি হুইনের হানি হুইনার হানি হুইনার হানি হুইনার বিবাহ

া বা—উকী। ধর্মাবভার। এসব সাক্ষী এর পক্ষ; আন্তর সাক্ষী অপক্ষপাতী বড়লোক।

প্র--উকী। ধর্মারতার! ল অব এভিডেকের ৭৭২ ধারাতে বলে সাক্ষীলওয়া কেবল কল্পুরের মনস্তুক্তির জন্য, এবং সাক্ষীর পদ, শুনতা, লোকপ্রিয়তা দেখিয়া প্রমাণ গ্রহণ করিবে, এবং ৭৭৮ ঘার্থতে বলে বিচারককে সাক্ষীর সত্তা, ক্ষমতা, সংখ্যা, দুঢ়তা, বহুদর্শিতা, দেখিতে হয়, এবং ৭৭৯ ধারায় বলে কেবল সাক্ষীর সংখ্যার উপর নির্ভির করা উচিভ নয়, ৬৮% ধারায় বলে সাক্ষীদিবার সময় তাহার রীভিনীতি এবং শুন্তে মনোব্রেণ কল্পে না, কি বল্পতে

ইতেছ কচ্চেমা ইত্যাদি দেখিয়া বিচারক সাক্ষীর উপর নির্জন করিবেল।

মূন! আমি আদ্যোপান্ত বুনিহাছি যখন গাত কন্যা ত্যাগ করিয়া অন্য কন্যা বিবাহ করিতে পাবে যখন বংশজকন্যা এহনে মানের হানি হয় না, তখন সপন্ধ করিলেও প্রতিবাদী তাহাতে আবদ্ধ নতে, যদি আবদ্ধ বলিয়া ধরা যায়, ত্যাপি নাদীর কৃতি কৈ যে আনাল্ল তাহা দেওগাইবেন, এগ্রিয় নক্ষ্ম, অদ্যহ মার ধ্যাচা ভিস্মিদ করিলাম।

না—উকী। ধর্মানতার। অন্যায় হইল, প্রতিবাদী
যথার্থ সম্বন্ধ করেছিলো।

প্র—-টকী। আপনার পদ রদ্ধি হউক; মকদ্যার ঠিক বিচার হয়েছে। (জনাভিকে হস্ত বাড়াইরা) কৈ আশু। আমার মেহলভেব টাকা কৈ ? এ মকদ্যা অন্যে কি বোঝাতে পাতো। এখন চল যাই।

ना- उनी। पूर्वाशंष्ट्र यां श्रेष्ट्र वादा।

( मकरलत क्षेत्राम )

देखि एक जाइ।

## সপ্তম অঙ্ক।

#### **~**₩~~

कभी मंदिबंद गोगेल मन्युथ । हुनी शदम ब खदनभ ।

দুর্গ। (স্বগত) হা কপাল। এত যোগাড় হলো:
কপাল এননি যে তাতেও কিছু হলো না: যাই একবার
জনীদার নশায়ের কাছে বলি তিনিই কি করেন দেখি।
স্বীদানের প্রবেশ।

জমী। ওহে দুর্গাখন। তক ভোমার বৈদিকেরা এখন কোথার? মেয়াদ যায় যে। আনি ত আগে বলে-ছিলুম, আমাকে যড়ু য়ে। না। তোনাদের কথার স্থিরনাই। দুর্গা। মশার! ভারাত দ্ব ভেগেচেন, এখন মশাই যা করেন, আমার বৈদিক মশাদের খুরে নোকার।

জমী। আছো, তুমি কাল ফয়শালা নে এসো, আমি আপীল করিয়ে দিচি, দকদমাটা দেখতে হবে। দুর্গা। যে আজা; তবে রায় ফয়শালা আনিগে।

(প্রস্থান।)

ব্যাপীল জাদালত। উক্লাল, জগীদার ও ডুর্গাপদের প্রবেশ।

क्त्री। (उकीनदक नत्त्राधन क्रिया) मूथूरमा

মশায়। এই মকদ্মানির আপীল কত্তে হবে; একটা অজুহত লিখে দিন, এটা পাঁপেরে দাখিল করা যাক।

মুখো। আচ্ছা! আমি অজুহত লিখে দিচি, কাগজ নে এসো, উকলাত নামা দেও—

### অজুহত লিখন—

১৮৬৭ শালের ৩০৭ এর প্রলের মুন্দেক মহাশ্রের ফ্রশালার মারাজিতে নিম লিখিত কেতৃবাদে আপীল করিতেতি।

### ८**५** जुर्गाल ।

- ১। এমাণের ভার প্রতিরাদীন উপর পড়াতেও সে তছি। প্রমান করিতে পারে নাই, ভবে মানণীয় লোক ছারা আমার সম্পূর্ন কপ প্রমান হইসাছে, ধনসেফ মহাশয়ও ভাষা স্বীকাল করিয়া ডিক্রী না দেওয়া অনাায়।
- ২। প্রতিবাদীর কন্যা বালিকা পাকায় তাহার কথা প্রাহ্য নহে। সে যাহা বলিয়াছে, তাহা দেখান কথা কথট বেপি হইতেছে।
- ও। হিন্দু শান্ত্রাধ্যাপক পণ্ডিত নহাশয়ের। বাজানকে অনুভ্রমনীয়া নিয়ন বলিয়া গিড়াছেন। তাহার। এরণ বলেন নাই যে, এ প্রথা অশান্ত্রীয়।
- 81 सन्दर्भक महानग्न दय वटलन, अट्रुक्तीर ५७ वर्ष्मद्रित विनिकात्री मछानवेछी इस, व्हिन्न वानदित्र अच्छि वानदेशीटन,

জাহার পিতার পদরী পাইবার বোগা হয়না, তাহ। জনার, জামাদিগের এইরপ চির কাল চলিয়া আদিতেছে; তথন যদি হয়ে সাংক্র ও এখনও হবে।

৫০ জিনি আরো বলেন, যে পিজা মাতা বালানে তত আহন্ধ নন তাদের এরপ স্বাধীনতা আছে যে, তাঁহারা অন্যথা করিলেও করিতে পারেন, এ যে অন্যায়, আমাদের শাস্তে যখন বাগদ্ভ পতি মরিলে কন্যার ঔষধ গ্রহণের ব্যবস্থা রহিয়াছে; তথন অশাস্ত্রীয় বলা কি অন্যায় নছে?

৬। মুনদেক মহাশয় যে বলিয়াছেন, বে এখন বাদীয় ক্ষতি কোথায়? খীকায় করি, আখায় প্রক্রের বিবাহ দিতে দে বায় ইইবে, বিবাহ পরে আমি তাহা প্রতিবাদীয় নিকট পাইব এই প্রাধা; আয় আয় মিছিল কালীন নিবেদন করিব।

महामय। व्याभीन माथिन करा शन; २६ जून मिन बीरी, त्मरे मिन व्यामत्वन, व्यात मू शक मितनत भरशा भाषामा यात्व, व्यातिर्हे कतिरह (मृत्वन ।

জনী। বে আজে। দূর্ণাপদ। হলোত, মুখুযো সহাশয় বড় দয়ালু।

দুর্গা। নমস্বার মশার! একটু অনুগ্রহ কর্মেন, আমি অতি গরীব এখন যাই।

(প্রস্থান)। <sup>\*</sup>

গঞ্জার ঘাট। জন আনিতে এলোকেনী । ও শ্যামার প্রবেশ।

भगमा। । प्रिप्ति । भावात्र माकि कार्रिस मकसमात

वाशीन करतरे होका लाज काथात ? अ मिर्ट्स स्थर क

अला। निषि । नकताई जारात्मत जन करीत जाना लिशिह। এ वात जमीमात मनाइई त्करन कि जाराजूता ना मवल्लाता कित्म मानीन कतिरहत्न এवात नाकि छत होका विट्ड इसनि।

শ্যামা। ওরে তাকে প্রতিপার বলে, অন্য অন্য খরচন ত আছে তা কে দিলে ? ওরত এককড়ারও মুরোদ নেই:

থলো। সেও জনীদার মশায় দিয়েচেন, আমর।
কমীদার মশার কি করিচি, আমরা বরৎ পারুদেশরেই
কাছে প্রার্থনা করি, যে রাজা হোন; উনি এ মরীবেন্দরে প্রতি এত লেগেচেন কেন?

শ্যাসা। ও দিদি। তুই বুকিস নে, ওঁর ক্রত জোদের জন্দ করা নয় ওঁর ইচ্ছে, এ সম্মাটা একে থারে উঠে যায়, তারির জনাই শেব পর্যন্ত দেখবার চেষ্টায় আছেন, সে কি বোন। মন্দ?

এলো। দিনি আনিত তাই বলি, উনি রাজা হোন, ওর ছেলে পিলে স্থাথে থাক্; এখন বেলা গেল চ ভাই।

( el (H | )

जब ७ लका वित्र आतम ।

জন। পেকার। ৩০০ নমন আপীলে কি একটা দর্থাত হলৈচে পড় ছেখি। প্রশান ধর্মারতার। রেম্পঞ্জাক আশুভোষ চক্রবন্তী বর্মান্ত কচে, যে এই সকদ্যাতি হলুরের কাছেই হয়, এটা অন্য বাহালি বিচারপতির নিকট না যায়।

কৰা কেন্থ কি আপত্তি করে?

পেক। হলুর। প্রতিবাদী আপত্তি কচে, যে আ-প্রীলান্ট বাঙ্গালি জন্ম বাহাদুরের পুরোহিত বৎশীয়। অজ্ঞান্তা। আমিই বিচার কচিচ, মকদমা পোশ

क्र

িশকা। পৌরাদা। মুখুযো মশায় ও চাটুযো মশায় উকীলকে ডাক।

ल्यामात कार्यम ।

পেয়াদা। মুকুষ্যে মশায় চাটুষ্যে মশায় আস্তে আজা হোকু হাকিম আপনাদের ডাকচেন।

(পেয়াদার প্রস্থান।)

## **डेकीनदा उ**नेचिए।

মৃশু। ধর্মাবতার । এ নকদনাটা নিম আদালতে বেশ প্রমাণ হয়েচে, প্রতিবাদী পূর্মে বাদীর পুত্রের সজে মেরের দয়স্থ করেছেলো, পরে টাকার লোভে কেবল অন্যথা করে বেচেচে, এখার বাদীর পুত্রের আর কুলী-নের ঘরে বে হবার যো নেই, মানের খুব হানি, এবং বিবাহ দিতে ভিনশ টাকার কম হইবে না।

# जन । ुत्नकात । भूमरमरकत ताम्रहे। शङ् स्वरि ?

(बाब शांठ)—वाही प्रशांशम ठजनकी প্রতিবাহী व्याखराजीय ठाकवर्षीय नारम हम लाहांत्र कनात गामीत शुरक्का নহিত সম্বন্ধ করিয়া তাহাতে আৰক্ষ থাকিয়া ও ইচ্ছাপুৰ্কত<sup>্ত</sup>িছি **उम क**तियाद्य, स्मर्टे विवादश्य कठि श्रुद्रशार्थ ३००० ठीका मार्थिहरू त व्यामानटक सानिम छेशहिक करत. श्राविदामी आहा काही शांत करत, रेशांट देल बार्का कहा बाह रा-अंजिवामी मधक कहियां दिन कि ना। যদি করিয়া পুরেক, তবে বাদী ভাহার নিকট খেলারত পাইতে शास्त्र कि ना? योगीत नाकी पाता छाहात मधक कता मध्यमान হইয়াছে। প্রতিবাদীর প্রার্থনামতে তাহার কন্যার, এজাহারে वाक रूप त्य को रामित अब कूदनिक उ वामसाङ्गानि शासाण तम বিবাহ করিতে অত্বীকার করে, কিন্তু বালিকা বিধায় ভাহার কথা शाहा नण्ह। डाहाटक च्यावस विधान रामी व्यंमात्र शहित्ह अ वित्रविभाग हिम्मूनन्याञ्चाधार्याकतः वरमम् देवनिक्त्रा ७ १अभी - कृलीन, वश्यक, व्यालिक, कृतीरनत शुक्रांक कना। इहें लड़े मश्रक इन, श्रे नामक यनि जना वालिक। निराह करत, वा भरत, जरव जे कमानि स्मीलिएक विवाह इस अवक यहि जे कना। मदत वा जामाक विवाह करत, जात वे यानक वर्तारक विवाह করিবে, ইহা ধর্মশাক্ষের বিধি নংহ কিন্তু অনেক দিয়া একপ कानि कानि बहे थाना ब दनस्ति कालान वित्या वामिट उट्टा नगमनकातिके, जर रिक्ट्नारअत विश्वतीय। मन् निश्चित्राह्म যে পাত্ৰ প্ৰস্তুত কন্যাপেক্ষা তিন গুৰ বছৰে। क ना बहु न कहा है के रे । ५० वरमहत्र मस्तानवर्धी दश किस शूर खंदा তথ্য ক্ষতি শৈশৰ প্ৰতিষ্ঠা হা হোক প্ৰথমণাত্ৰাগাপকের৷ বলি

মাছেন নে এই প্রথায় কেছই লাক্ষ নহেন, পিভাষাতার জন্যথা করণে স্বাধীনতা আছে। অতএব বাদীর দাবি আদালতে প্রতি মোলা নয়। যদি তকের খাতিরে আবদ্ধও বলা বায়, ভগাপি এখনও বাদীর কোন কৃতি দেখা যায় না। অভএব বাদী এখন কিছুই দাওয়া করিতে পারে না, বাদীর পুত্রের বংশক কন্যার সহিত অনিশ্বিত বিবাহ যেমন সম্ভব্ধ, কলা ভাহার মৃত্যুও তজ্ঞেপ সম্ভব, অভএব এই মকজ্মা আমি মুদ্সহ মায় প্রচা ডিগ্মিস করিলাম ইতি।

্ মুখু। ধর্মাবতার। আদাদেত এরণ ছকুন দিতে পারেন আমার পুতের বিবাহ দিলে যাহ। বার হইবে, আমি প্রতিবাদী ইইতে তাহা পাইব।

চাটুং প্রতিরে তাই ও অন্যান, বিবাহের বারের সন্তা বনা কি, আদালত এরপ হকুম দিলে, এ বৈদিকদিণের থেরল চক্রান্ত, উহারা অনর্থক আলো বাজিতে দশহাজার টাকা থরচ করিয়া আমার মক্ষেলের মর্কানাশ কবিতে পারে? আমি ত লিগাল (Legal) বারের সন্তাবনা দেখি না, পাত্র ভাল হইলে কন্যার পোণ পিতে হয় না, এখন উনি আদালতে সুইবংশজ ও গোলিক প্রমাণ হিয়া মাধুন দেখি যে, জারা মেয়ে বেচে, কেহুই স্বীকার করিবে না, বিদ্যার বিমল জোভিয়প্রভাবে বোধ হয় ভারতবর্ধের জার তত মুরবন্থা নাই, যে কন্যা বিক্রের করিবে, যদি আদালতে আনিয়া কোন বংশক বা মোলিক সম্পথি স্বীকার করে যে আমি ত্রিরে বেচি, উবেও বেশারত পাইতে,পারে; তবে অপাত্র চালাইছে ক্রিকিই পাক্রী না হলেও বিরাহ সিদ্ধ হয়, চাকর বর্মান্ত না ताग्र कि आमात्र भरकल फिटब नांकि ? नांक्षीक्ष्य, ७ ६। विवाहशूटक কর্ত্তব, বটে ক্লিক্ত যে পিতৃ দাঁতৃ আকে বিমুখ তাল কি নান্দীয়নে लक्ष है को वाब मक्षव ? ना छोड़ा आयोत महत्त्वत रमंब है स्म छ हेनि दंशाति दर दनदर्ग राष्ट्रे शात्महे मान्ती पूर्व कविएक शहेरवः। বৌভাতের খবচ কিছু থেঁশারত ছইছে পারে না। ভাহা ইছা। न्माती এकजम थालप्राइटलल इंग्नः > लक्ष था ध्याइटलल इंग्न, उटर বাদী উহার পুত্রের বিবাহ জন্য কোনো খেনারভ আমার মধ্যে-लात निक्के प्रार्थ्या कतिएक भारतम ना, अने स भारतीय नरह विनय আমার মজেল তাহাতে প্রাপদ্ধ নাত্ম যে পণ্ডিত বলেন, বাগ্দত্ত कसा। यः श्रुल मतिरम एउन ब्रालि अरमीर शहन मनिए इस ভাচা ব্যবহার নিষিদ্ধ সেটা কেবল শান্তে আছে মাত্র, ব্যবহারে চলিত नारे। नाट्य चार्ट पूछ ना शा<sub>किस्त ना जो उन्ना स्टेरन</sub> অপরের স্ত্রীতে সন্তান উৎপাদন করিয়া লাইবে, সে আইন 🏕 এখন চলে, ওএকটি ডদ্রপ ? বাগ্দান প্রকরণেই এছকর্ডা लिथिতেছেन " ভোগাংকে । বह আত্রজে " वागुप्रीन कतिवहती পর যদি তদপেক। উত্তম পাত্র পাত্র। যায়, তবে বাশুদ্ধ বর্মী পরিত্যাগু করিবে, তথন আমার মকেল তাহাতে আবদ্ধ কি প্রকারে? জনকত বৈদিক চক্রান্ত করিয়া আপনারাই সাক্ষী मिश्राट**ड मञ्जू कतिश्राटड, छोट्**। एउटे वा कि कि ?

মুখু। ধর্মাবতার! সকলেই মেরে বেচে, "এমে" দিয়েও মেয়ে অনি পাওয়া বায় না?

ক্র । আছা। তুমি এমন গুটা কত সাকী দেওয়াতে। বুরা, যে তারা টাকা নের বলে, কেন একজন সাক্ষী ছে, বুবাচে যে বানি ছেলের বে বিশ্বিছিঃ চাকা লাগেনি। থাকৈ, যে আমি মেয়ে বৈটি; আমাদের শান্তে মেয়ে বে-চাকে মহাপাপ বলিয়া থাকে।

अब् । তবে আমি ওকথা শুন্তে চাইনে। এ আ-পীল মায় খরেচা ডিসমিস করিলাম, রেস্পগুল্ট অদ্যা-বধি আদায় দিনপথ্যন্ত স্কদসহ বাদীর নিকট পায় এবং প্রব্যানেকের খরচাও বাদী আপীকান্টের জিয়া হয়!

(প্রস্থান।

বাদী। ক্যীদারকে সম্বোধন করিয়া) মহাশায় চলুন।
প্রতি। প্রতিপালক মহাশয়! জগদীখরে,ছার
আরি আপনার রুপার আমি আপাযুক্ত হইলাম, আলীবাদ করি চিরক্টীত হউন।

জনী। আমারও ইচ্ছেছিল, বে ইহার যা হয় একটা হৈক এই স্মধ্যের গুণ হাদ্যে উদিত হইলে হাদ্য ফাটিরা যায়। যথন সহক্ষে জী ও স্থানী মনে পড়ে তথান যে মুম্ম কড় জহন্য হোগ হয় তাহা ব্যক্ত করা যায় না। এখন সকলেই নিশ্চিত হুইল, চলনুবে মুদ্ধে যাই!

(मकामत व्यक्ति।)

# स्वधातत खातमा

क्षा आनिशन, यसूर्शन, यरमंत्रीय गर्ग। निवास भगानि विके देशन समानन व व्यक्तरिय निवास व्याद विवस समान ; स्राय क नियासिं । विके सारमान विभास ় এই কেশ্সক্ষ প্রাপ্ত লান্য আচার; क्टब्रिट रेगिक गाँद क्वक छाता कान कारण दकान दमरम हेश त अन्य, না জানি কাহার ঘরে হইল প্রথম। এতকাল আধিপত্য করিয়া বিস্তার, वनहीम इत्राह्य अत्व इत्राहात। আজি কালি বুরি বিধি হৈল অনুকূল। अधना टेविंगिक अथा कतिन निर्मा ला कुलीन राभक्त खांत दर्भाविक विजात । रुवेस मधान नत नम असुतांश b वुनीन विकि युवः ! कीवतम छाशाह ! ं नाष्टि एन थि एकांन कार्टन में मेंट श्रेन मंगोते ॥ रेमन्द्र मामद्र कृत्त क्लान छेशांकिन द्यीयस्म व्याद्धम धर्मा मार राम्य गम ॥ ं সকল ফাভিন্তে প্রায় আছে এই রীত। दरवल टेविनककूटल दम्शि विश्ववी**छ**।

वानाकरिल्द्र, त्व वस्यः, ब्लाटनीम् माहि इस,

বিবাহ কি জানে না বথম ে প্র ব্যন জননী পাশ, ছাড়িবারে পায় এাদ,

ধূলা থেলা করিবারে খন।। নে সময় পিত। মানী, যুবতী কামিনী আমি

পরিণয়ে করেন বন্ধন ! বিবাহে কি শ্বুধ তাহা, জানিতে নালারে আহু সংক্রথ যায় প্রথম শীর্মন चतात्र भूट्यत वाभ, अटह कछ भित्रणांभ,
श्रीवशाम निरम कर्षे भाग ।
जार्भन मात्र दश्रेष्ठ कमानि विवाह पिट्छ,
पिवानिणि गरत छावनात्र ।
जार्थन छोवित्र! कृत, अमार्थ देविषक कृत,
किटम कृत बहिटव वजात्र ।
व छाएछ कृटनत कृत निरम हत निरम्न,
कृत छहत छक्न स्ताम ।

रिविक स्विक शन! कित निर्वणन :

गावक सर्वाक शन! कित निर्वणन ।

रेशियक पूर्ण गाव करान कीर्तन।

होएम नवक गाव महास क्यान ।

होएम नवक गाव महास क्यान ।

होएम छानात सामा करा सहामम।

छात स्वन रहम क्या किर महि करत।

छात स्वन रहम क्या करा महि करत।

छात रान रहम श्री करा महि करत।

छात रान रहम श्री भार करा महि माम।

छात रान रहम श्री भार करा महि माम।

M HAN A

यक्तिका शास्त्र